भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 3	15.5.2006 सोमवार (मई - जून)	प्रति अंक : 10.00

मूर्ति अनेकों आपने दी हैं, आनंद कराया — स्मृतियाँ दी हैं...

मार्च महीने के अंतिम रविवार की आतुरता से राह सहज ही हम सभी को रहती है... **मार्च का अंतिम रविवार यानि** — आत्यांतिकी मुक्ति के दाता प.पू. काकाजी द्वारा हमें दी गई अनुपम भेंट - **प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन का उत्सव** !

इस बार **26 मार्च, रविवार** को **प.पू. गुरुजी की जयंती** मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तकरीबन एक महीने से सभी संत, युवक, बहनें, भाई - भाभियाँ अपने - अपने विभाग में लगे हुए थे। फिर भी जब जिसकी जहाँ जरुरत लगी उस सेवा में वह जुट गया। ऐसी '**सेवा**' हर एक भक्त के आध्यात्मिक उत्थान के लिए जीवन का एक बड़ा - अनमोल '**सत्कर्म**' सहज बन जाती है। यहाँ सहज ही प.पू. काकाजी महाराज के वचन याद आ जाते हैं — '**जमात - करामात**' ! और... इसीलिए हर एक को उत्सव की खुश्बू अलग ही महसूस होती है, जो कि मुक्तों के उद्‌गारों से ख्याल पड़ ही जाता है।

उत्सव के पश्चात् **प.भ. मोहन बंसलजी** बोले —

'फंक्शन बेस्ट नहीं, यूनीक फंक्शन था।'

और... **प.पू. साहेब के** साथ आए **मुक्त** भी **बोल उठे** थे —

'प्रसाद, व्यवस्था, दिल्ली के सब भक्तों का अपनापन - माहौल भीतर तक स्पर्श कर गया...'

मार्च का रविवार चाहे कभी भी आए, लेकिन इंद्रदेव तो निमंत्रण पाकर एक दिन पूर्व आ ही जाते हैं। यूं, इस बार भी 25 मार्च की शाम को बहुत तेज बरसात हुई। कई दिनों से दिन -रात सेवा करते छोटे - छोटे बच्चे पहले तो दो मिनिट के लिए मायूस जैसे हो गए। पर सभी ने प.पू. गुरुजी द्वारा ही सिखाया रामबाण इलाज — '**धुन**' **का सहारा लिया और स्टेज को कोई नुकसान नहीं पहुँचा** ! इससे भी अधिक —26 की सुबह तो कड़ी धूप थी, पर शाम को मौसम सुहावना बन गया। मानो **प्रकृति भी प.पू. गुरुजी की जयंती का उत्सव मनाने — साथ देने आई हो।**

उत्सव के दो दिन पहले ही गुजरात, मुंबई, पंजाब से मुक्त आ गए थे। हर वर्ष की भाँति सुहृद्‌भाव व कुटुंबभाव की नींव को मजबूत करने की भावना से **प.पू. साहेब** भी अपने साथ करीब तीस मुक्तों को लेकर एक दिन पहले आ गए थे। तबियत नासाज़ होने के कारण **प.पू. स्वामिजी** नहीं आ पाए। पिछले वर्ष ही संपर्क में आए **टी.वी. आर्टिस्ट श्री विश्वास पंडयाजी** अपनी माताश्री और अपनी पत्नी **सौ. प्राची** के साथ इस उत्सव में आए। सौ. प्राची तो अपनी सास के साथ एक दिन पहले ही आ गई थी। सौ. प्राची की सास पू. अनसूयाबेन

पहली बार ही मंदिर आई थीं। यहाँ का सारा माहौल और प.पू. दीदी का वात्सल्य व सभी का अपनापन उन्हें खूब स्पर्श कर गया। उन्होंने इतना आनंद महसूस किया कि वे खुल कर हँसी और बोलीं कि – *'22 साल के बाद मैं ऐसा हँसी हूँ...'*

26 मार्च की शाम भी आ पहुँची... फूलों की लड़ियों से सुसज्जित मुख्य द्वार बाहर से ही उत्सव का एहसास करा रहा था। अबकी बार युवकों की पोशाक एयर फोर्स के जवानों का प्रतिरूप बनाने तैयार करी थी... भूतपूर्व लॅफ्टेनन्ट जनरल प.भ. वालिया साहेब करीब डेढ़ घंटे की दूरी तय करके युवकों को मार्चिंग की प्रेक्टिस कराने तीन - चार बार आ चुके थे। सो, उनके नेतृत्व में तैयार हुए एयर फोर्स की पोशाक पहने युवक मार्चिंग करते हुए सायं छः बजे प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, पू. वशीभाई एवं अन्य महानुभावों को सभा मंडप तक ले गए। धुन - भजन से सभा की शुरुआत हुई।

अब की बार मंच की पृष्ठभूमि प.पू. गुरुजी की जयंती के निमंत्रण कार्ड की रॉकेट वाली कन्सेप्ट पर ही तैयार की गई थी... जगरांव के **प.भ. सोमनाथ कतियालजी** ने करीब सात -आठ दिन दिल्ली – मंदिर में रुक कर खूब भक्तिभाव से पर्दा पेईन्ट करा व हर साल की तरह प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत व युवकों ने 'रॉकेट' का हुबहु आकार दर्शा कर प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करी। प.भ. राकेशभाई शाह ने सभा में निम्न प्रकार खूब विस्तार से इसका मर्म भी समझाया।

परम पूज्य काकाजी महाराज कहते कि –

'' टेईक ऑफ करने प्लेन की तरह रॉकेट को 'रन वे' की जरुरत नहीं होती, वह सीधे ही ऊपर उठ जाता है।

इसी तरह मुकुंद को यानि – हमारे गुरुजी को 'मन' ही नहीं है, सीधा 'चित्त' ही है।

सो वह जो भी देखे - करे उसका उसके चित्त में सीधे ही फोटो पड़ जाता है।''

उनकी यही विशेषता उन्हें भगवान और संत से संबंध कर लेने खूब यानि खूब उपयोगी सिद्ध हुई। फलस्वरूप उन्हें एट धी फर्स्ट साईट अनिर्देश के चैतन्यशिल्पी **प.पू. योगीबापा और प.पू. काकाजी** जो भा गए, उन्हें चित्त से **फटाक** पकड़ लिया। उन्हें यदि और कोई यूं भा जाते और सीधे चित्त पर छा जाते, तो प.पू. गुरुजी किस राह पर अग्रसर हो पड़ते वह अकल्पनीय है।

पर, प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी महाराज जैसी प्रभुधारक विभूतियों से ऐसा निखालस व निष्कपटभाव का संबंध दृढ़ किया, तो प.पू. काकाजी ने उनका अद्‌भुत व बखूबी जतन भी किया और भगवान की मूर्ति बक्षीस में दे दी। **गुरुहरि प.पू. पप्पाजी** के शब्दों में प.पू. गुरुजी आज प.पू. काकाजी रूप ही बन गए ! यूं –

इन्होंने प्रभु की 'प्रगट' मूर्ति 'चित्त से' पकड़ी,
संत के प्रसंग से 'प्रत्यक्ष' करी
और
अखंड रखी है।

दूसरी ओर –

स्टेज के प्रवेश के ऊपर ही एक वाक्य लिखा था –

विज्ञान अर्थात् – ज्ञात से अज्ञात की ओर,
अध्यात्म अर्थात् – अज्ञात से ज्ञात की ओर।

विज्ञान में डेटा हमारे पास होता है, लेकिन उससे होने वाली प्रक्रिया व परिणाम का हमें पता नहीं होता। इसलिए **विज्ञान की यात्रा** के लिए कहा जाता है कि **एक्सप्लोरेशन फ्रॉम नोन टु अननोन।** जबकि **अध्यात्म की यात्रा** में - प्रभु प्राप्ति की राह में, हमें ज्ञात है - हम जानते हैं कि प्रभु का अस्तित्व है ही, लेकिन उन्हें पाने के मार्ग से - तरीके से हम अज्ञात हैं। इसलिए प.पू. काकाजी महाराज कहते कि – **इन स्पीरीच्युआलीटी धी एक्स्प्लोरेशन इझ फ्रॉम अननोन टु नोन।** हाँ, गुणातीत संतों की निश्रा में परम सत्यस्वरूप को - प्रभु को प्राप्त करने की राह छोटी व आसान हो जाती है !

निमंत्रण कार्ड में और मंदिर के मेईन गेट पर लगे लोगो में जो लिखा था – **स्पीरीच्युअल टेक्नीश्यन्स न्यूक्लियस** – उसकी व्याख्या करते हुए बताया कि प.पू. काकाजी महाराज द्वारा कथित इन शब्दों का मर्म समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने एक बार बात करी थी कि –

1966 में जब संस्था ने हमें अलग किए, तब काकाजी और पप्पाजी बार - बार ठोक ठोक कर कहते थे कि –

'ये सब बातें तो सिर्फ शॉ कॉज़िज हैं; लेकिन एक एन्लाईटन्ड ग्रुप अलग करके बापा अब चाहते हैं कि स्पीरीच्युअल टेक्नीश्यन्स न्यूक्लियस तैयार हों।'

इसीलिए परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी और परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी की सेरेछाया में - नेतृत्व में हमें अलग किए थे। काकाजी - पप्पाजी के उस समय के लेटर्स पढ़ेंगे - कैसेट्स सुनेंगे, तो ये बातें ख्याल आएंगी। आख़िर - आख़िर 1984 में आणंद में मनाई प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती की जाहिर सभा में भी इसी बात को प.पू. काकाजी ने –

इन धीस युवक कन्वेन्शन, सेईन्ट्स लाईक कोठारीस्वामी एण्ड प्रेमस्वामी हूम वी कॅन प्लेस इन धी इन्टरनेशनल मार्केट ऑफ सेईन्ट्स शुड हेव बीन इन्क्रिज़्ड एण्ड धेर बाई फुलफिल अवर ऑब्लीगेशन टु योगी बापा – कह कर दोहराया। हमें इसी बात को पकड़े रखना है...

स्वामी विवेकानंद ने सही कहा है – ***'टेम्पल्स आर बट किन्डर गार्टन्स'।*** छोटा बच्चा स्कूल नहीं जाता हो, उसकी पढ़ाई में रुचि जगाने के लिए नर्सरी खोली जाती है। इसी तरह **'प्रवाही मार्ग'** को धर्माभिमुख करने के लिए मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा, गिरजाघर जैसे धर्मस्थान होते हैं। पर, **चैतन्य की प्रगति कराना तो ऐसे स्पीरीच्युअल टेक्नीश्यन्स – चैतन्यशिल्पी संतों का कार्य है।**

गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प से प.पू. काकाजी महाराज - प.पू. पप्पाजी महाराज व प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी द्वारा आज देश - विदेश में जगह -जगह **'गुणातीत परिवार'** के ऐसे **'अध्यात्म संशोधन केन्द्र'** खुले हैं। मानो - इन **कार्यशालाओं** में ऐसे **'स्पीरीच्युअल टॅक्नीश्यन्स'** तैयार हो रहे हैं।

हम दिल्ली वालों को प.पू. काकाजी महाराज ने ऐसे प.पू. गुरुजी भेंट दिए। सो, आज विराजमान सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि इस लक्ष्य - ध्येय को भूले बिना प.पू. गुरुजी द्वारा दिखाए इसी रास्ते पर ही चल कर हम प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी का परिश्रम साकार करें !

तत्पश्चात् प.भ. नरेन्द्रजी (जगरांव), प.भ. एल.पी. सिंहजी, प.भ. समीरभाई दवे (अमदावाद), प.भ. वीनुभाई नकारजा (लंदन - अनुपम मिशन), प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब (वाईस चान्सलर - महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी), प.भ. विश्वास पंडयाजी, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी एवं प.पू. वशीभाई ने अपने - अपने अनुभव और प.पू. गुरुजी की महिमा का दर्शन कराया। मुंबई से आए प.भ. विश्वास पंडयाजी को सुबह की महापूजा में प.पू. गुरुजी के वचन से मूर्ति में भगवान स्वामिनारायण के प्रगट रहने की जो दिव्य अनुभूति हुई, मानो उत्तर भारत के सभी भक्तों को श्रीजी महाराज ने संदेश दिया कि गुणातीत स्वरूपों द्वारा प्रतिष्ठित उन संगेमर्मर की मूर्तियों में वे स्वयं साक्षात् विराजमान हैं।

प्रासंगिक उद्‌बोधन के पश्चात् हारविधि एवं कलगी अर्पण का कार्यक्रम शुरु हुआ।

प.पू. साहेब को प.भ. नासा साहेब ने दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से हार अर्पण किया।

प.पू. गुरुजी को अक्षरज्योति की बहनों की ओर से प.भ. विश्वास पंडयाजी ने फेन्सी हार अर्पण किया जिसमें उत्सव का लोगो इस प्रार्थना के साथ अंकित किया गया था कि –

प.पू. काकाजी का सेवन करके आध्यात्मिक रॉकेट बन कर प.पू. गुरुजी संबंध में आए मुमुक्षुओं को प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं और हम सभी का भी वे ऐसा जतन कर रहे हैं। सो, प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में प्रार्थना कि हम आपको हर प्रकार से साथ देने -आपकी योजना सफल करने में जुड़ जाएं ऐसा बुद्धियोग कृपा करके आप ही देना।

इसके अतिरिक्त मुंबई, गुजरात, पंजाब से आए हरिभक्तों ने अपनी भावना प्रकट करते हुए प.पू. गुरुजी को फूलों के हार अर्पण किए।

साथ ही मंच पर उपस्थित सभी महानुभावों का कलगी से स्वागत किया गया, तो दूसरी ओर पू. बा, पू. अनसूयाबेन, सौ. प्राची का भी कलगी से स्वागत किया गया।

इसी बीच **प.पू. रामदेवजी महाराज** भी खूब अपनेपन से उपस्थित हुए... प.पू. गुरुजी ने ठाकुरजी का हार पहना कर उनका स्वागत किया। प.पू. साहेब ने शाल ओढ़ा कर एवं वस्त्र देकर उन्हें सम्मानित किया।

हम सभी जानते हैं कि आज के युग के योगी - प.पू. रामदेवजी महाराज विश्व ख्याति प्राप्त किए हुए हैं। इतनी ऊँचाई पर पहुँचने के बावजूद उनका प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी के साथ एक विशिष्ट और कैसा संबंध है, वह उनके निम्न जेस्चर से पता चलता है।

उत्सव के दो दिन पहले ही प.पू. गुरुजी की प.पू. रामदेवजी से फोन पर बातचीत हुई। प.पू. गुरुजी ने सहज ही कहा कि आप उत्सव में आने वाले हैं, तो मैं लेने आऊँ ? तुरंत प.पू. रामदेवजी बोले –

मैं भले ही कितनी ऊँचाईयों पर पहुँच जाऊँ, पर साहेब और आपका तो सेवक ही हूँ। तो, मैं उत्सव में अपने आप आ जाऊँगा।

सो, सेवकभाव के प्रतीक ऐसे प.पू. रामदेवजी महाराज को प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का फेन्सी हार **प.भ. मल्कानी अंकल** द्वारा अर्पण करवाया और साथ ही उन्हें दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से एक सम्मान पत्र भी दिया। प.पू. रामदेवजी महाराज ने भी सभा को अपने आशीर्वचनों का लाभ दिया।

प.पू. रामदेवजी के आशीर्वचनों के बाद सत्संग के युवकों ने एक **'आईटेम भजन'** को भावमुद्रा द्वारा प्रस्तुत किया।

कई पिक्चर्स के गाने टॉप हिट जाते हैं और सभी बच्चों और युवा पीढ़ी पर तो वो खूब छा जाते हैं। प.पू. गुरुजी की इच्छा हमेशा ऐसी रहती है कि सत्संग के बच्चे और युवा पीढ़ी उसी में ना ढली रहे। उनको यही रहता है कि उन रागों पर भजन बनाएं, तो बच्चे और युवा पीढ़ी वो राग में ओतप्रोत होने के कारण भजन के शब्दों में ढल जाएं। इसी हेतु से अब का टॉप **हिट आईटेम सोंग 'कजरारे - कजरारे'** के राग पर प.पू. दीदी एवं प.भ. राकेशभाई ने आज के लिए 'आईटम भजन' बनाया था, जिसके बोल थे –

'भगवा रे - भगवा रे ऐसा रंग दो मेरा मनवा।'

अंत में... प.पू. रामदेवजी ने प.पू. दीदी से प.पू. काकाजी महाराज की डाक टिकट का सोविनियर लेकर सभा से विदाई ली।

प.पू. रामदेवजी की विदाई के बाद प.पू. साहेब व प.पू. गुरुजी ने आशिषवर्षा करी। हर बार की तरह रात के वही दस - सवा दस बज चुके थे, लेकिन ये चार - पाँच घंटे कहाँ व्यतीत हो गए किसी को ख्याल ही नहीं पड़ा ! करीब १२०० - १५०० हरिभक्तों का समूह **ज़रा भी बोरियत का एहसास किए बिना** खूब श्रद्धा व भक्ति से अक्षरधाम की इस सभा का अनोखा आनंद ले रहा था। करीब पौने ग्यारह बजे उमंग व हर्षोल्लास के साथ सभी प्रसाद लेने गए।

सभा का समय खूब लंबा हो गया था, सो समय की अवधि देखते हुए प.पू. गुरुजी ने प्रसाद की समाप्ति के पश्चात् रात को साढ़े बारह बजे करीब ३०० - ३५० हरिभक्तों के बीच 'केक कटिंग' करके स्मृति दी...

सच, अब की बार तो उत्सव में प.पू. गुरुजी मानो अलग - अलग रूप में स्मृतियाँ देने ही बैठे थे।

- मुंबई से आई **सौ. प्राची** ने उत्सव की सुबह ही मंत्र जाप करने वाली माला मांगी थी। तो, उत्सव के लिए प्रवेश करते फूलों के गलीचे पर चलते - चलते ही प.पू. गुरुजी ने रूक कर उसे माला भिजवाई और फिर मंच पर गए... प.पू. गुरुजी की ऐसी करुणा - सहजता देख कर सौ. प्राची की आँखे सहज ही नम हो गईं...
- प.पू. गुरुजी जैसी गुणातीत विभूतियों की यही चाहना होती है कि छोटा हो या बड़ा – उसका संबंध प्रभु से बना रहे। पानीपत से **प.भ. नवनीत गोयलजी** की पाँच साल की बेटी मुग्धा को उसके मंदिर आने पर हमेशा चॉकलेट्स, टॉफी, मूंगफली इत्यादि का पूरा पैकेट बनवा कर प.पू. गुरुजी भिजवाते हैं। पर, ऐसे बड़े उत्सव में सभा में भी मंच से प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा मुग्धा को देने के लिए प.पू. दीदी को चॉकलेट, वेफर्स, नमकीन इत्यादि से भरा पैकेट भिजवाया।

* सभा दौरान मंच पर विराजमान प.पू. साहेब एवं महानुभावों को ठंडा पेय देने जब स्वयंसेवक आए, तो प.पू. गुरुजी खुद उठ कर प.पू. साहेब एवं प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब आदि मुक्तों को कोल्ड कॉफी देने गए। प.भ. मनोजभाई सोनी को प.पू. गुरुजी की यह सहजता भीतर तक स्पर्श कर गई, जिसका जिक्र उन्होंने अपने प्रासंगिक उद्‌बोधन में भी किया।
* और... आख़िर में तो मानो सभी को एक साथ 'ईदम्' स्मृति देने प.पू. रामदेवजी जब सभा से विदाई ले रहे थे, तो प.पू. गुरुजी ने फट् अपना कुर्ता उतारा और वहीं सोफे पर बैठ कर प्राणायाम करते हुए पूछा कि – मैं ठीक करता हूँ ना ? प.पू. गुरुजी की यह मुद्रा देख कर एक बार तो प.पू. साहेब भी खिलखिला कर हँस पड़े।

पर, प.पू. गुरुजी कैसी निखालस व निर्दोष विभूति हैं उसका यह दर्शन कराता है कि – जिसका प्रागट्य दिन मनाया जा रहा हो और बारह - पंद्रह सौ हरिभक्तों बैठे हों ऐसे समय में –

मंच पर जाने से पहले रुक कर माला भिजवाना,
चॉकलेट्स - नमकीन के पैकेट्स भिजवाना,
खुद कोल्ड कॉफी देने खड़े हो जाना
या
कुर्ता उतार कर सहजता से प्राणायाम करना –
वो तो जिसे 'गुरु' होने की 'कॉन्सियसनेस' ना हो और अनोखे भक्तिभरे दिल का हुबहु स्वरूप हो – वही कर सकता है।

कोटि - कोटि वंदन प.पू. काकाजी महाराज को कि ऐसी गुणातीत विभूति की गोद उत्तर भारत के मुक्तों को दी !

*(आइए, **26 मार्च** के उत्सव पर मुक्तों के दिल के उद्‌गार निहारें व स्वरूपों द्वारा बरसाई आशिष वर्षा की गंगा में स्नान करके धन्य बनें...)*

प.भ. नरेन्द्रजी

मैं पंजाब - जगरांव से आया हूँ। **जगरांव का नाम काकाजी के साथ जुड़ा हुआ है।** पंजाब में जगरांव काकाजी की कार्यस्थली रहा है। हमें श्री स्वामिनारायण भगवान के बारे में कभी भी कुछ मालूम नहीं था। विनोदजी जो कि अभी भजन गा रहे थे, छोटी आयु में घर से गुम हो गए। इनके पिताजी परम भक्त श्री मनोहरलालजी, जो अब अक्षरनिवासी हो गए हैं, वो मेरे साथ ही ऑफिस में काम करते थे। हम लोग उस समय अध्यात्म में ज्यादा विश्वास नहीं करते थे, पर हमें संतों के आने का पता लगा, तो जैसे कि बाय धी वे देख लेते हैं करके हम गए – काकाजी के दर्शन हुए। हमने अपनी बात रखी, तो बड़े सहज से उन्होंने कह दिया – कोई बात नहीं लड़का मिल जाएगा। हमें वो बात उस समय मामूली - सी लगी, क्योंकि हम उस महान विभूति को, उनमें बसे परब्रह्म तत्त्व को पहचान नहीं रहे थे। पर, कुछ दिनों बाद विनोद का एक पोस्ट कार्ड आता है। वह अपने बारे लिखता है। मैं भी पोस्ट ऑफिस में काम करता था और मनोहरलाल –' चाचाजी ' भी वहीं काम करते थे। हम डाऊटफुल नॅचर के ही रहे हैं। तो हमने उस मोहर को देखने की कोशिश करी कि मोहर जेन्युईन तो है ना ? लगता था कि अमृतसर की तरफ की है। मुझे शक हुआ कि संत भी बड़े चालाक होते हैं, हो सकता है कि कोई चिट्ठी डाल दी हो। ये सब भाव है – मानव का। हमें क्या पता था कि हम किसके बारे में सोच रहे हैं और हमारे समक्ष कौन है ? पर, विनोदजी मिल गए और आज आपके सामने बैठे भी हैं। फिर तो कई घटनाएं घटी। काकाजी पंजाब में आने लगे। वहाँ बाबा संत सिंह की छोटी - सी धर्मशाला में हुए उत्सव को याद करता हूँ और आज यहाँ के स्टेज को देखता हूँ, तो कितनी भव्यता है ? कितनी सुंदरता है ? कितना लावण्य है ? लेकिन जहाँ काकाजी ने स्टार्ट किया, हमारे साथ संपर्क हुआ – वो जगह बहुत सिम्पल थी। तो कहाँ से बीज फूटे, कौन खुद चल कर हमारे पास आया ? और कितने हम भाग्यशाली हैं ? यहाँ पंजाब के बहुत हरिभक्त बैठे हैं – जगरांव से, मोगा से बहुत आए हुए हैं, जो काकाजी के संपर्क में आए थे।

हमें बताया गया है कि जिसने स्वामिनारायण का आसरा लिया – जो काकाजी की शरण में आ गया, जो गुरुजी की शरण में आ गया – उसका अक्षरधाम रिज़र्व हो जाता है। रिज़र्वेशन की सीट काकाजी के पास है, यह मैं डंके से कहता हूँ। यह बात सिर्फ कहने की नहीं है। इसका इन्सीडन्ट है। मैं काकाजी के सत्संग में जाया करता था और मेरी माताजी को

भी इन्ट्रेस्ट आ गया। वो भी श्री स्वामिनारायणजी की आरती करने लगीं। वो बीमार हो गई थीं और डॉक्टर्स ने बताया कि अब वो ज्यादा रहने वाली नहीं हैं। स्थिति यहाँ तक आ गई कि ऑक्सीजन की नलियाँ लग गईं। वे अचेत रहने लगीं; दो दिन - चार दिन अचेत रहीं। जब उनका अंतिम क्षण आया, तो हम सब भाई - बहन उनके इर्दगिर्द बैठे हुए थे। एकदम क्या घटना घटी कि वे अपने आप उठ कर बैठ गईं और उनके चेहरे पर लाली छा गई ! उन्होंने अपनी ट्युब्स अपने आप निकाल दीं और कुछ बोलने लगीं। मैं बहुत हैरान हो गया। मैंने कहा माताजी ! क्या बात है ? तो उन्होंने बताया कि मुझे काकाजी लेने आए हैं। मैंने उनसे पूछा कि ये बताओ कि काकाजी ने वस्त्र कैसे पहने हुए हैं ? तो उन्होंने उसको एक्सप्लेईन कर दिया कि ऐसे -ऐसे पहने हुए हैं। बाद में दो बार उन्होंने स्वामिनारायण की आरती करी। वैसे मेरी माँ मुझे नरेन्द्र नहीं कहती थी, अपने घर के नाम से पुकारती थी। पर, उस समय उन्होंने नरेन्द्र कह कर काकाजी की आवाज़ में पुकारा और हमें पूरा विश्वास हो गया कि उनमें तो काकाजी आ गए हैं और उन्हें लेने आ गए हैं।

यह आरती हुई तब हमारे पास कोई प्रसाद नहीं था। काकाजी किसी घर में जाते थे और उस समय यदि प्रसाद ना हो, तो काकाजी कहते कि – थोड़ी - सी चीनी ले आओ। ठीक उसी तरह वे बोलीं कि – थोड़ी - सी चीनी ले आओ और थोड़ा - सा प्रसाद सबसे पहले मुझे दिया और मेरे सिर पर हाथ रखा। मुझे बहुत शांति मिली। हमें कोई भी डाऊट ना रहा और मुझे पूरा यकीन हो गया कि – भक्ति की बात तो बहुत ऊँची है, पर काकाजी के साथ के लगाव से, काकाजी का चिंतन करने से आदमी का कल्याण हो जाता है।

काकाजी कई बार जगरांव आते थे और वहाँ **उन्होंने बहुत कठिन हालात में काम किया।** पैदल चलते थे और कई बार उनको रिक्शा में बैठना पड़ता था। सर्दी भी सही और गर्मी भी सही। किसलिए ? वो आज हमें पता लग रहा है। उस समय इस बात को हम समझ नहीं पाए कि हमको क्या देने वे हमारे घर पर आए हुए हैं। मैं पोस्ट ऑफिस में क्लॅरीकल जॉब में था। मेरा मन नहीं लगता था कि क्या यह जॉब है ? मुझे तो किसी ऊँची पोझीशन पर होना चाहिए। स्वामिनारायण की धुन करते थे, काकाजी के साथ रहते थे - उनके आशीर्वाद लेते थे। मन में यही संकल्प किया कि यह जॉब नहीं करनी, काकाजी - कुछ करके दिखाओ। उस समय हमारे डिपार्टमेन्ट में डायरेक्ट आई.पी.एस की पोस्ट नहीं थी। पर, कुछ दिन के बाद मेनेजमेन्ट में ऐसा लेटर आया कि आप यह एग्ज़ाम दे सकते हो। मैं उसके लिए तैयार नहीं था। पर, मैंने फार्म भरा और काकाजी का स्मरण किया। मैं एग्ज़ाम में बैठा और आप हैरान हो जाओगे कि उस एग्ज़ाम में ऑल इंडिया की छः पोस्ट में मैं सबसे अव्वल आया ! जैसे कहते हैं ना कि धन्ने की हुंडी भगवान तारते हैं। मेरी हुंडी काकाजी ने तारी ! ऐसे तो बहुत प्रसंग हैं, ऐसी बहुत - सी बातें हैं।

और... उसके बाद 'गुरुजी' का हमारे साथ सान्निध्य रहा... 'गुरुजी' को हमें वे देकर गए हैं। गुरुजी हमें अपनी छत्रछाया में रख रहे हैं। पता नहीं – किस तरह ये हमें संभाल रहे हैं, पर आज एक समाज बना है। जब भी यहाँ कोई फंक्शन होता है, तो मुझे तो यही लगता है कि ऊपर से देवी - देवता भी काकाजी के दर्शन करने के लिए, गुरुजी के दर्शन करने के लिए, दिव्य मूर्तियों के दर्शन करने के लिए यहाँ हमारे मंदिर में आते ही आते हैं। कई बार माता के दर्शन करने जाते थे। अपनी - अपनी सोच है – अनुभव हैं, पर ऐसा लगता है कि अब हमें वहाँ दर्शन करने जाने की जरुरत नहीं है। हमारे सामने साक्षात् दिव्य मूर्ति **आनंदी दीदीजी** विराजमान हैं। काकाजी ने हमें उनके रूप में दिव्य मूर्ति दी है।

तो, **आज पंजाब का समाज – गुणातीत समाज काफी बढ़ चुका है और उसमें काकाजी अनथक् का परिश्रम है।** और...आज हम गुरुजी की गोद में पूरा सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। चाहे काकाजी स्थूल रूप से हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं, सूक्ष्म रूप से अभी भी वे हमारे बीच विद्यमान हैं और जो गुरुजी हमारे बीच बैठे हैं – काकाजी की ज्योत ही है। तो आज इस समाज के साथ मैं जो खड़ा हूँ यहाँ, इन दिव्य मूर्तियों के दर्शन कर रहा हूँ – ये जो मेरा अहोभाग्य जागा है, वो सारी काकाजी की देन है और गुरुजी का संरक्षण है। उन्होंने हमें इस उच्च कक्षा में दर्जा दिया है, चाहे हम उसके काबिल नहीं हैं। जय स्वामिनारायण !

प.भ. एल.पी. सिंह साहेब

मैं बोम्बे में एयर इंडिया में उड़ान अभियन्ता हूँ और उड़ान चालक भी हूँ। श्री ओ.पी. अग्रवालजी के द्वारा गुरुजी के संपर्क में मैं बहुत कम समय से आया हूँ। लेकिन गुरुजी का स्नेह मुझे इतना भाया - इतना भाया कि हमारा दिल गुरुजी का साथ छोड़ने को नहीं मागता था। मैं अपने परिवार की तरह, अपने समाज की तरह गुरुजी के साथ जुड़ गया और अभी - अभी की बात है कि मैं गाँव गया, तो अपने गाँव का गुड़, अपने गाँव का चावल – दोनों गुरुजी के लिए लाया। गुरुजी ने सबसे पहले हमारा गुड़ खाया, बहुत प्रशंसा करी; हमें बहुत - बहुत खुशी हुई। दिल आत्मा से गद्‌गद् हो गया। गुरुजी ने बोला कि – मैं दोनों टाईम यही चावल खाऊँगा, तो मुझे और खुशी हुई। और मैं ज्यादा क्या बताऊँ ? इस परिवार से, इस मंदिर से, स्वामिनारायण के यहाँ से जितने सदस्य हैं – गुरुभक्त हैं, उनसे मैं परिवार की तरह जुड़ गया हूँ। गुरुजी का स्नेह मुझे बार - बार यहाँ आने के लिए आकर्षित करता है।

प.भ. समीरभाई दवे

आज यहाँ पर कॉनसेप्ट है – ‘ विज्ञान और अध्यात्म ’। स्वामिनारायण भगवान इस धरती पर आए, तो स्पीरीच्युआल्टी में भी एक एड्‌वान्समेन्ट आई। स्वामिनारायण भगवान ने आशीर्वाद दिए हैं कि – मेरे संतों द्वारा मैं इस धरती पर अखंड हाज़िर रहूँगा। हमने तो स्वामिनारायण भगवान को देखा नहीं है। हमें गुरुजी जैसे स्वरूप मिले, उन्हीं के द्वारा स्वामिनारायण भगवान की अनुभूति होती रहती है।

वैसे विज्ञान का एक नियम होता है कि कोई भी चीज की ऑथेन्टीसीटी देने के लिए उसके प्रुफ्स देने पड़ते हैं। तभी जाकर वो ऑल ओवर एक्सेप्टेबल होती है। तो स्वामिनारायण भगवान की ये जो बात कि मैं मेरे संतों द्वारा इस धरती पर अखंडित प्रगट रहूँगा, वो बात हमारे दिल में कैसे बैठती है ? उसके लिए प्रभु हमें अनुभव कराते हैं। हमारी पूरी फॅमिली गुरुजी के साथ इतनी करीबी से जुड़ गई है और फॅमिली में हर एक को कुछ ना कुछ अनुभव हुए हैं। इससे हम मानते हैं कि स्वामिनारायण भगवान उनमें से काम कर रहे हैं। स्वामिनारायण भगवान के प्रसंगों में कई बार सुना होगा कि महाराज बैठे होते थे गढडा में – दादा खाचर के दरबार में और उनके दर्शन होते किसी भक्त को कहीं और जगह पर ! ठीक उसी तरह हमारी फॅमिली में कईयों को गुरुजी के दर्शन हुए हैं।

हमारी फॅमिली बोम्बे छोड़ कर गुजरात - अमदावाद में सेटल होने जा रही थी। सो, ऑल ऑफ ए सडन घर में से छः मेम्बर कम हो गए और पापा बैंक में जाते थे। मेरी मम्मी, जिसे सभी ‘बेबा’ के नाम से जानते हैं, दिन के टाईम पर वो घर पर अकेले पड़ जाते थे। तो उन दिनों उनको बहुत रोना आता था कि मेरा घर खाली हो गया। गुरुजी की मूर्ति के सामने रो - रोकर बोलती रहती थीं कि मैं अकेली पड़ गई - मैं अकेली पड़ गई। तब मम्मी को एक अनुभव हुआ। दोपहर के टाईम पर वो ऐसे रो ही रही थीं कि गुरुजी प्रगट हुए और दर्शन दिए। वो दर्शन भी ऐसे कि संतों की मर्यादा का पालन करते हुए ! घर के द्वार पर खड़े रह कर उन्होंने बताया कि तू निश्चिंत रूप से आराम कर, सो जा और अगर घर में कोई धार्मिक पुस्तक हो, तो बाहर कुर्सी पर रख दे; मैं दरवाजे के बाहर बैठ कर वो पढ़ता रहूँगा और तू निश्चिंत रूप से सो जाना। यह कह कर गुरुजी वहाँ से चले गए। गुरुजी की बात पकड़ कर मम्मी ने दूसरे दिन भी बाहर कुर्सी पर एक पुस्तक रख दी। दोपहर को सोने के बाद मम्मी ने पुस्तक वापिस ली, तो उसके बारह पन्ने पलटे हुए थे। ह्यूमन मेंटालीटी है, सो – थोड़ा संशय आ जाता है कि ये सच में गुरुजी पधारे होंगे या हमें कोई आभास हुआ होगा। वैसे भी ये बैंक मेनेजर की वाईफ है। तो उसने अपना थोड़ा दिमाग लगाया और एक बुकमार्क लेकर उस पेज के आगे रख दिया। दूसरे दिन भी सोने जाने से पहले वो बुक कुर्सी पर रख दी। दूसरे दिन भी बारह पेईजिस पलटे हुए थे और बुक मार्क आगे गया ! फिर ऐसे तीसरे दिन हुआ। तीन दिन तक टोटल छत्तीस पेईजिस गुरुजी ने वहाँ बैठ कर पढ़े ऐसा मम्मी को अनुभव हुआ। उसी दौरान में गुरुजी की सेवा में दिल्ली आया हुआ था और दिल्ली से मैं डाइरेक्ट मुंबई गया। मैं जाकर हमेशा मम्मी को

गुरुजी की बातें करता रहता हूँ। तो, घर जाकर मैंने मम्मी को बताया कि गुरुजी ने ये बातें करी – ये प्रसंग सुनाया। मम्मी ने मुझे कहा कि रुक जा, फिर एक बुक लेकर आईं और पढ़ी हुई बुक में से मम्मी ने पन्ने निकाल कर बताए। जो प्रसंग की बातें गुरुजी ने दिल्ली में करी हुई थी, वो ही प्रसंग उन पन्नों पर थे। इस बात से प्रतीति होती है कि स्वामिनारायण भगवान वाकई ऐसे संतों द्वारा इस धरती पर अखंडित प्रगट हैं। यूं गुरुजी के रूप में स्वामिनारायण भगवान काम कर रहे हैं, उस बात की प्रतीति हो गई।

एक और अनुभव शॅर करना चाहूँगा। हम मुंबई से जब शिफ्ट हुए, तब मेरी वाईफ 'तृप्ति' की तबियत बहुत खराब रहती थी। मुंबई में बहुत सारे डॉक्टर्स को दिखाया - करा, दो महीने तक सी.टी. स्केन, एम.आर.आई. वगैरह बहुत सारे इन्वेस्टीगेशन्स करवाए – रिपार्ट्स निकलवाए। क्लीनीकल रिपोर्ट्स से कुछ डायग्नोज़ नहीं हो पा रहा था, पर उसे लगातार उल्टियाँ होती रहती थीं और उस दौरान उसका वज़न भी काफी कम हो गया था। कल यहाँ सभा में नाथुराम भट्ट का प्रसंग आया था, वो सुन कर मुझे उन दिनों की याद आ गई। आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर मुझे यही प्रार्थना कर लेनी है कि गुरुजी हमें ऐसे नाथुराम भट्ट नहीं बनना है। कुछ भी करके बस आपको चिपके रहें, आपको पकड़े रखें और संसार का जो भी मोह - मायाजाल है, वो सब हमारे छूट जाएं और आप जो हम से कराना चाहते हो, वो कर पाएं – ऐसा आज आशीर्वाद दे देना। तो, उन दिनों मुझे बड़ी चिंता रहती थी कि ये कुछ निदान नहीं हो पा रहा है, क्या होगा ? बाई बर्थ हम लोग ब्राह्मण हैं। तो कुछ रिलेटिव्ज़ ने दिमाग में ऐसा डाल दिया कि ये जो तृप्ति इतनी बीमार रहती है, उसका कारण यह है कि – आपकी कुलदेवी आप पर नाराज़ हो गई हैं। वैसे हमें गुरुजी का जोग हुआ उसके बाद हमारी निष्ठा स्वामिनारायण भगवान के प्रति एकदम पक्की हो गई थी। सो, कुलदेवी की जो कुछ विधियाँ होती हैं, वो हम ऑबजर्व नहीं कर पाते थे। फिर हमने गुरुजी से बात करी। तो गुरुजी ने कहा कि ऐसा कुछ नहीं है, आप तृप्ति को दिल्ली प.पू. दीदी के पास भेज दो। यूं गुरुजी ने उसे दिल्ली बुलवा लिया और बताया कि तुम्हें कुलदेवी नड़ती है – ऐसा सबको लगता है ना ? आनंदी दीदी जो हैं, वो हमारी प्रगट देवी हैं। आप आनंदी दीदी का पूजन कर लो और... जिस प्रकार आरती उतार कर कुलदेवी की पूजा करते हैं – उसी प्रकार प.पू. गुरुजी ने अक्षरज्योति की सारी बहनों की पूजा करने तृप्ति को कहलवाया। उसकी विडियो शूटिंग उतरवाई, फोटोग्राफ्स निकलवाए और वो सारा मम्मी को मुंबई भिजवाया। फिर कहा – जाओ अब आपको कुछ नहीं नड़ेगा। गुरुजी हमेशा कहते हैं कि प्रगट की उपासक ये एक - एक बहनों में करोड़ों वैष्णोदेवी से अधिक ताकत है। करीब डेढ़ महीने तृप्ति को दिल्ली में रखा और वो बात काम कर गई। रोज प्रसाद भिजवा कर उसकी तबियत अच्छी कर दी और फिर वो अमदावाद आई ! यूं प.पू. दीदी की ग्रेस से वो रिकवर हो गई। ऐसे तो बहुत सारे अनुभव हैं...

प.भ. वीनुभाई नकारजा

आज गुरुजी के जन्मदिन पर हमें यहाँ आकर आप सब के दर्शन हुए, हम अपने आप को खूब भाग्यशाली मानते हैं। इंग्लेन्ड में अनुपम मिशन – जो प.पू. गुरुवर्य साहेब की आज्ञा से चलता है, उसकी शुरुआत होने से पहले काकाजी के दर्शन का और उनकी बातें सुनने का हमें बहुत चान्स मिला था। काकाजी एक बहुत महान संत थे। उनके गुरुजी योगीजी महाराज थे – उन्हें उनका बहुत गर्व था। हमने बहुत बार उनसे सुना है कि मेरा बाप योगीजी महाराज है। **काकाजी के हमने ऐसे दर्शन किए हैं कि कहीं भी जाना हो, कोई हरिभक्त उनकी सेवा करे या ना करे, उनकी जेब में पैसे हो या ना हो, उन्होंने जो भी कार्य करना चाहा हो, वो कार्य सफल होते हुए हमने देखा है** – हमारी खुद की आँख से।

काकाजी और पप्पाजी ने हमारे समाज को बहुत धन्य किया है; क्योंकि उनकी कृपा से आज हमारे साथ गुरुजी हैं, साहेब हैं, हरिप्रसादस्वामी हैं और इन गुरुओं के मार्गदर्शन से हमें जीने की अच्छी तालीम दी जा रही है।

१९७३ में काकाजी जब पहली बार इंग्लेन्ड में मिले तब एक रविवार की सभा में दर्शन करने का हमें लाभ मिला था। हमारी माताजी वहाँ हमारे साथ थीं। माताजी को वहाँ सभी - काकाजी भी 'कॅप्टन' कह कर बुलाते थे। काकाजी ने हमारी

माताजी को पूछा कि आपकी कितनी संतान हैं ? हमारी माताजी ने बोला मेरी नौ संतान हैं। हम लोग नौ भाई हैं और एक बहन है हमारी। काकाजी ने पूछा इसमें से कौन सत्संग में आता है ? तब मुझे अंदर से बहुत ऐसा लगा कि काकाजी को हमारी मधर को ऐसा क्यों पूछना पड़ता है ? तो काकाजी के पास जाकर उनके चरणस्पर्श करके मैंने बताया काकाजी हम अफ्रिका में योगीजी महाराज के दर्शन करते थे। अफ्रिका में योगीजी महाराज को हम नहलाने के लिए जाते थे, जब हम आठ - नौ साल के थे। जब से इंग्लेन्ड में आए हैं, तब से हमें कोई सत्संग का संजोग नहीं है। आपकी कृपा और आज्ञा से हम अभी हर रविवार को सत्संग की सभा करेंगे। और... आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि आज उस बात को ३३ साल हो गए; कभी भी हमने रविवार की जो सभा है, जो योगीजी महाराज का आदेश था - जो काकाजी का आदेश था - जो साहेब का आदेश है - जो गुरुजी का आदेश है – वो एक भी सभा नहीं करी हो, ऐसा नहीं हुआ है। रविवार की जो सभा है, वो अवश्य करनी चाहिए। हमारे जीवन में यह साहेबजी ने सिखाया है। साहेबजी की बात सुन कर, उनका जीवन देख कर, गुरुजी का जीवन देख कर हमें बहुत प्रेरणा मिलती है...

प.भ. विश्वास पंड्याजी

आप सब को प.पू. गुरुजी के जन्मदिन के हार्दिक जय स्वामिनारायण ! यहाँ पर गुरुजी ने बहुत अच्छा रॉकेट बनवाया हुआ है और ऊपर लिखा है कि 'अज्ञात से ज्ञात की ओर – फ्रॉम अननोन टु धी नोन'। मुझे लगता है कि अननोन को नोन करने के लिए सिर्फ बिलीफ – यानि 'विश्वास' – यानि कि मेरी जरुरत है। अगर आपमें विश्वास है – तो आप मानेंगे, यदि नहीं है – तो नहीं मानेंगे। फिल्म वाला हूँ, एक्टर हूँ और प्रोड्यूसर हूँ – इसलिए आपको एक फिल्म का उदाहरण देता हूँ कि – राज कपूर ने एक फिल्म में एक सड़क के किनारे एक पत्थर दिखाया था। सब वहाँ से गुज़र रहे थे, पर कोई देख नहीं रहा था। किसी ने आकर उस पर उगंली से तीन सफ़ेद लाईनें खींच दीं और अचानक सभी उस पर फूल बरसाने लगे और दीए करने लगे। क्योंकि वो पत्थर से शिवलिंग हो गया था ! यूं आप मानो तो शिवलिंग है और ना मानो तो पत्थर है।

गुरुजी के साथ मेरे अनुभव बहुत कम हैं। क्योंकि मैं सिर्फ पाँच महीनों से गुरुजी को जानता हूँ। दो नवंबर जब मेरा जन्मदिन था, तब मैं यहाँ आया था गुरुजी से मिलने पहली बार। उससे पहले फोन पर मेरी बात हो चुकी थी गुरुजी से और जब फोन पर बात हुई तब मुझे ऐसा लगा कि गुरुजी को मैं बरसो से जानता हूँ - पहचानता हूँ। और... जब मैं यहाँ आया तो आनंदी बहन ने बताया कि जब गुरुजी ने बात करी थी मुझ से फोन पर, तो उन्होंने भी यही कहा था कि – मुझे लगा कि ये कोई मेरा अपना है – मैं इसे बरसों से जानता हूँ।

छोटे से अनुभव हैं, लेकिन इंग्लिश में कहावत भी है कि **गॉड इझ इन स्मॉल थिंग्स।** आपके साथ बाँटना चाहूँगा। जब मैं पहली बार आया तो स्वामिनारायण भगवान के बारे में या स्वामिनारायण धर्म के बारे में, गुणातीत परिवार - समाज के बारे में कुछ भी पता नहीं था। फिर भी **जब मैं यहाँ पहुँचा तो सब के साथ इस तरह घुलमिल गया, सबने मुझे इस तरह अपना लिया कि मुझे लगा कि ये मेरा अपना परिवार है।** गुरुजी से जब मिला – गुरुजी के पास आकर बैठा, तो गुरुजी ने एक चॉकलेट दी थी। मैं वो चॉकलेट वहीं पर भूल गया था और कपड़े बदलने चला गया; क्योंकि उसके बाद स्टेज पर फंक्शन के लिए जाना था। तो मुझे महसूस हुआ कि गुरुजी ने मुझे प्रसाद दिया और मैं वहां भूल गया – मैंने गुरुजी का अनादर किया है और शायद मुझे इसकी कोई सजा मिलेगी या कुछ बुरा होगा मेरे साथ। आफ्टर ऑल ह्यूमन माईन्ड है, तो डाऊट्स तो आते ही रहते हैं। लेकिन कपड़े बदल कर गुरुजी से मिलने जब मैं स्टेज पर पहुँचा और गुरुजी के चरण छुए तो गुरुजी ने एक चॉकलेट खोल कर मेरे मुँह में डाल दी। ये बताने के लिए कि – चॉकलेट अगर भूल गए थे, फ़िकर नहीं – मैं आपको दूसरी दे दूँगा।

फिर प.पू. आनंदी दीदी ने काकाजी की समाधि पर प्राची और मेरी शादी करवाई। बहुत आनंद हुआ – क्योंकि सारे परिवार ने हम पर फूलों की वर्षा करी और हमने समाधि के सात फेरे लिए। **यूं हमारी शादी दो नवंबर को ही हो गई थी,**

लेकिन समाज के लिए नौ दिसंबर को हुई ! जब हम शादी के फेरे ले रहे थे तो **प्रीति** – जिसे गुरुजी प्यार से 'जाडी' कहते हैं, उसे किसी ने भेजा कि वह मेरे गले पर कपड़ा और प्राची का दुपट्टा बांध दे। जब वो बांध रही थी तो कईयों ने कहा कि – लिजिए, आपको बहन मिल गई है। शाम को हम भोजन कर रहे थे, तो मैंने प्रीति को घूमते हुए देखा और मेरे दिमाग़ में ख्याल आया कि किसी ने कहा था कि – यह आपको बहन मिल गई। पर किसे मिली ? प्राची को मिली या मुझे ? मेरे दिमाग़ में सिर्फ ख्याल आया था कि पाँच मिनिट बाद गुरुजी ने किसी भक्त के साथ एक मिठाई का टुकड़ा भिजवाया और कहा कि – 'जईने जाडी ने आपी आवो' अने ऐने कहो के एना भई विश्वासे मोकली छे। मुझे लगा कि गुरुजी मेरा मन पढ़ लेते हैं क्या ? या सच में भगवान स्वरूप हैं ? या सच में उनमें भगवान स्वामिनारायण प्रकट हैं ? आफ्टर ऑल इन्टलॅक्ट है। नीचे बहनें बर्तन धो रही थीं, गुरुजी ने कहा आप जाकर देखिए – वो आज ही रात को सारे बर्तन धो देंगी। मैंने कहा ठीक है और...मैं चला गया। वहाँ से मैं जब ऊपर लौट रहा था, तो मेरे मन में फिर एक डाऊट आया। मैंने सोचा कि अगर गुरुजी सच में भगवान हैं – भगवान स्वरूप हैं या उनमें स्वामिनारायण भगवान प्रकट हैं, तो वे मुझे अपनी कुर्सी दे देंगे। ये कहेंगे कि तुम मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ, जो कि मुझे लगा कि सिर्फ भगवान कर सकते हैं। तो मैंने देखा कि गुरुजी ने अपनी कुर्सी बदल ली है और मेरी कुर्सी पर बैठ गए हैं। और... जैसे ही मैं गुरुजी के पास पहुँचा तो गुरुजी ने कहा – विश्वास, आवो -आवो तमे अहिंया बेसो और अपनी कुर्सी की ओर इशारा किया। मैं बिलकुल ही गद्‌गद् हो गया, मैंने गुरुजी के चरण पकड़ लिए; क्योंकि मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैं क्या कहूँ। पर, मैंने बस इतना जाना - पहचाना कि गुरुजी में स्वयं भगवान हैं और गुरुजी मेरे लिए भगवान का स्वरूप हैं।

आज का एक आख़िरी अनुभव आपके साथ शॅर करना चाहूँगा। आज सुबह जब हम आए, तो महापूजा में धुन चल रही थी। पूजा शुरु होने से पहले गुरुजी ने मुझे कहा कि वशीभाई जो हैं, वो जब पूजा करते हैं, तो भगवान यहाँ खड़े हो जाते हैं। तब मुझे बात समझ में नहीं आई। खैर, पूजा के लिए बैठ गए। धुन चल रही थी, मैं भी धुन कर रहा था और आँखें बंद थी। अचानक मुझे पूजा के स्थान पर स्वामिनारायण भगवान दिखाई दिए ! यकीन तो नहीं हुआ, बिलकुल ही नहीं हुआ। अगेईन ह्यूमन माईन्ड है; तो मैंने आँखें बंद करके स्वामिनारायण भगवान से कहा कि – भगवान, अगर आप सचमुच यहाँ प्रकट हैं और आपने इस समय हरे और पीले रंग के वस्त्र डाले हैं; यही वस्त्र ऊपर मंदिर में होने चाहिए ! तो मैं मानूंगा कि आप प्रकट हैं। और...पूजा के बाद जब मैं ऊपर मंदिर में गया तो बिलकुल वही हरे व पीले कपड़े ! आई थिंक – अब इससे ज्यादा मैं सबूत माँग नहीं सकता और ना ही मुझे माँगना चाहिए। जय स्वामिनारायण !

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

...जैसा कि आप सभी को मालूम होगा कि कोई गुरुजी की महिमा बताने की चेष्टा करता है, तो गुरुजी अलाउ नहीं करते - बताने नहीं देते। पर, अभी आप सुन रहे हैं कि कैसे वे भगवान के स्वरूप हैं और कैसे भगवान को धारण किए हुए हैं। प.पू. साहेबजी की एक बात खूब अच्छी तरह से याद आ रही है। पिछले साल इस मंच पर उन्होंने बताया था कि ऐसे संत महापुरुष अपनी महिमा नहीं गाने देते हैं, पर उनकी जन्मजयंती पर उनकी महिमा गाने का ऐसा मौका मिलता है। नए लोग जो आते हैं, उनको भी खूब अनुभव होते हैं, प्रतीति होती है। जैसे विश्वासजी ने बताया कि कैसे उनको विचार आए और उसके बाद कैसे वो जिज्ञासा पूरी हुई और उनको कैसा दर्शन हुआ। हम सभी को ऐसे खूब अनुभव हुए हैं।

इस वर्ष गुरुजी का ६९वां बर्थ डे है। मतलब गुरुजी को ६९ वर्ष पूरे हो रहे हैं। कैसे संजोग और सांकेतिक बात है कि गुरुजी १९६९ में दिल्ली आए और अब उसे ३७ वर्ष पूरे हो रहे हैं। दूसरी ओर गुरुजी का जन्म '३७ में हुआ और उन्हें ६९ वर्ष पूरे हो रहे हैं।

६ और ९ का इंग्लिश में भी और हिन्दी में भी – पर्टीक्यूलरली इंग्लिश में देखें तो ६ और ९ का आपस में कम्पलीट सर्कल बन जाता है, जो कि हमें यह संदेश देता है कि हमें खूब मिलजुल कर रहना चाहिए।

मैं देख रहा हूँ कि पिछले काफी समय से गुरुजी एक चीज पर खूब जोर दे रहे हैं कि हम स्वरूपों की महिमा की बातें तो करते ही हैं, लेकिन भक्तों के साथ मिलजुल कर हमें ऐसा एक संबंध बनाना चाहिए। गुरुजी ने खूब परिश्रम करके एक कुटुंबभाव की जो योजना बनाई है, उसकी वजह से ये सारा समाज हरियाला दिखाई पड़ता है – ऐसा आनंद मिलता है। दूर बम्बई में रहते हुए भी मुझे और मेरे परिवार को फीलींग नहीं होती कि हम दूर हैं। गुरुजी ने दिल्ली, मुबंई, अमदावाद, पंजाब कहीं की भी दूरी नहीं रखी है। जैसे टेलीफोन में एस.टी.डी. अभी ऑल ओवर इंडिया एक रूपये मिनिट का हो गया। सारी दूरियाँ खत्म हो गई ! कहीं कोई बाधा – बंधन रहा नहीं। वैसे आप सब को मालूम है कि **गुरुजी चौबीस घंटे एवॅलेबल हैं। कभी भी हम उनको फोन करें, कुछ भी प्रॉब्लेम हो, कोई भी बात हो तो वो हमारे लिए हाज़िर !**

दूसरी एक बहुत इम्पोर्टन्ट बात। मैं यह ऑब्ज़र्व करता रहता हूँ कि गुरुजी को बस – काकाजी की ही लगन है। आज सुबह ही मैं देख रहा था कि महापूजा में चौकी पर जो कपड़ा बिछाया हुआ है, उसमें काकाजी का सिम्बल इम्प्रीन्ट किया हुआ है। बहनों ने और भाभियों ने जो बिन्दी लगाई है, उसमें भी काकाजी का वही सिम्बल ! यूं हर वक्त, हर जगह उनको काकाजी दिखाई देने चाहिए।

सो, हमें ऐसे गुरुजी मिले हैं, जो अपने गुरु के लिए ये सारा कर रहे हैं और काकाजी जो चाहते होंगे, वह रास्ता सरल बना कर उस पर हमें चला रहे हैं।

अनुभवों की तो बात क्या करूँ ? खूब अनुभव हुए हैं। पर, समय की सीमा देखते हुए मैं भगवान स्वामिनारायण के चरणों में, काकाजी और गुरुजी के चरणों में सिर्फ प्रार्थना रखना चाहता हूँ – जो अपने हाथों से टूटी - फूटी वृज भाषा में बनाई है; क्योंकि मैं कोसी का - मथुरा का रहने वाला हूँ। मेरी त्रुटियों को क्षमा करना, लेकिन प्रार्थना का भाव है इसलिए कहना चाहता हूँ –

‘श्रीजी मोरी इतनी अरज सुन लीजो, श्रीजी मोरी इतनी अरज सुन लीजो;
मोहे गुरुजी का ही संग दीजो, मोहे गुरुजी का ही संग दीजो।
श्रीजी श्रीजी जाने मोरी प्रभु में निष्ठा कराई, वा गुरुजी को राजी करवा दीजो;
श्रीजी श्रीजी मोरी इतनी बिनती सुन लीजो, मोहे दूजो जनम न दीजो।
श्रीजी श्रीजी, गुरुजी गुरुजी आप काकाजी के हो प्राणप्यारे,
आज बिनती है जन्मदिन पर तुम्हारे, मोहे अपना रॉकेट बना लीजो।
मोहे अपना रॉकेट बना लीजो, श्रीजी - श्रीजी।’

प.भ. मनोजभाई सोनी साहेब

...अभी - अभी मंच पर एक छोटी सी घटना घटी।
एक ऐसा व्यक्ति जो भगवे वस्त्र में विराजित है,
ऐसा व्यक्ति जिनके प्रति कईयों की आस्था है,
एक ऐसा व्यक्ति जिनके विषय में लोगों का अनुभव है कि उनके द्वारा साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण कार्य कर रहे हैं,
एक ऐसा व्यक्ति जिसका प्रागट्य दिन मनाया जा रहा हो,
सामने भक्त समुदाय बैठा हो,
जय जयकार हो रही हो
और
वो व्यक्ति बीच सभा में उठ करके मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति को दूध का ग्लास देने मेरे स्थान पर आ जाए ! ये घटना केवल दो ही परिस्थिति में संभव लगती हैं। या तो वो व्यक्ति अपने आपको छोटे से - छोटे से - छोटे से व्यक्ति से भी छोटा मानता

हो –‘**अणोरणियान्**’। या तो वो व्यक्ति अपने आपको बड़े से - बड़े से बड़ा बादशाह मानता हो –‘**महतो महियान्**’ ! शास्त्रों में यह कहा है कि ‘अणोरणियान् – महतो महियान्’ केवल एक ही है – **वो है परमात्मा** ! तो स्वभाविक है कि यह छोटी -सी घटना का निर्देश भी यही कहता है कि एक ऐसा व्यक्ति हमारे बीच विराजमान है, जिनका अनुभव काफी कुछ लोगों को आध्यात्मिक क्षेत्र में हुआ - चमत्कारों के माध्यम से हुआ और... ऐसी एक छोटी घटना के माध्यम से भी हम सब के लिए यह दर्शनीय बना। यह सरल बात नहीं है; यह जो घटना घटी ये किसी भी आम व्यक्ति के लिए, सामान्य मनुष्य के लिए करना असंभव है। अभी हाल **प.पू. साहेबजी का प्रागट्य दिन ब्रह्मज्योति में मनाया गया तब** एक वरिष्ट नागरिक साहेबजी को पुष्प माला अर्पण करने के लिए नीचे बैठे थे और जब उनका नाम पुकारा गया, तो **हजारों लोगों, हजारों भक्तों की उपस्थिति में भी साहेबजी स्वयं मंच से नीचे उतरे और उनकी पुष्प माला ग्रहण करी** !

मनुष्य के जीवन में देखा जाए तो – किसी एक अंतिम चीज की प्राप्ति की मनसा हो, तो वो है आनंद ! आनंद बहुत ऊँची बात है। सुख, खुशी, समृद्धि, शांति इन सबसे ऊँची बात है। शास्त्रों ने तो – गुरुजनों ने तो आनंद को ‘ब्रह्म’ का रूप कहा है। ‘**आनंदोब्रह्म**’ ! विज्ञान की जो तलाश है, वह भी आनंद की ही तलाश है। फ्रॉम ‘नोन टु अननोन’ जो परस्यूट रहता है, वो अल्टीमेट्ली तो आनंद का है और सही मायने में जो वैज्ञानिक उसे प्राप्त कर लेता है, वह आनंदित हो जाता है। आर्कीमिडीज़ के बारे में शायद आप सभी को पता है। उसने जब स्नानघर में अपने जीवन की एक बहुत बड़ी शोध प्राप्त करी, तब बिलकुल उसी अवस्था में वो पूरे शहर में ‘यूरेका, यूरेका, यूरेका’ करते हुए घूमे ! एक परम आनंद की वो अवस्था थी। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी ‘अज्ञात से ज्ञात’ की प्राप्ति का अंतिम ध्येय है – ‘आनंद’ ! लेकिन देखा जाए तो या अकसर यही देखने में आया है कि विज्ञान की अप्रतिम प्रगति के बावजूद भी सही अर्थ में आनंद की प्राप्ति होना मुश्किल लगता है और आध्यात्मिक क्षेत्र में साधना करने वाले अनेक साधकों का भी ये अनुभव रहा है कि इतनी साधना करने के बाद भी आनंद का अनुभव नहीं होता। निर्मल परम आनंद का अनुभव नहीं होता। क्या वजह हो सकती है इसकी ? मेरे अपने छोटे से अनुभव में यही आया है कि चाहे वो विज्ञान का क्षेत्र हो, चाहे वो अध्यात्म का क्षेत्र हो। मनुष्य अगर मन रखता है, तो मन के साथ एक आधिपत्य की भावना भी जन्म लेती है – अपेक्षा की भावना भी जन्म लेती है। वो चाहता है कि अपने जीवन पर, अपने आस - पास के परिसर पर, अपने आस - पास की सृष्टि पर उसका एक आधिपत्य रहे – उसका एक नियंत्रण रहे। और जहाँ - जहाँ आधिपत्य का भाव जुड़ता है, वहाँ - वहाँ आनंद निर्मूल होता जाता है। यहाँ जश से जशभाई तक की साधना करने वाला व्यक्ति, जशभाई से जशभाई साहेब तक की साधना करने वाला व्यक्ति और जशभाई साहेब से ‘साहेब’ तक की साधना करने वाला व्यक्ति हमारे लिए दर्शनीय है। दिलीप से मुकुंदजीवन तक की साधना करने वाले व्यक्ति, मुकुंदजीवन से गुरुजी तक की साधना करने वाले व्यक्ति और गुरुजी से ‘गुणातीत’ बनने वाले व्यक्ति भी हमारे बीच मौजूद हैं। और... इन दोनों व्यक्तियों ने विज्ञान और अध्यात्म का एक ऐसा समन्वय साधा है , जिसमें आधिपत्य को निर्मूल कर दिया है। अपने आप को बिलकुल प्राकृतिक, सहजिक बना दिया और अपने आपको समर्पित कर दिया ! आज केवल एक ही प्रार्थना है कि आपके हृदय में जो हमारा स्थान है, वो यावच्चन्द्र दिवाकरौ और उससे भी आगे सदाकाल रहे और हमारे दिल में आप सदाकाल विराजित रहें, ऐसा दिल - ऐसा देह - ऐसा जीवन आप ही की कृपा से प्रदान हो। धन्यवाद -जय स्वामिनारायण !

श्री मांगेराम गर्गजी

...बड़े सौभाग्य की बात है कि – अभी सोनीजी, जो कि बड़ौदा यूनीवर्ससीटी के वाईस चान्सलर हैं, उनका अभिनंदन किया गया। जिस माला से अभिनंदन किया गया, वह स्वतः स्वामिजी ने स्पर्श करके उनका अभिनंदन किया है। निश्चित रूप से **आपकी ऐसी आत्मीयता हमें सदैव बल देती रही है**। किसी भी व्यक्ति, जिसने सदैव अपने जीवन में एक आदर्श स्थापित करते हुए समाज को सर्वांगी विकास की ओर ले जाने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है, निश्चित रूप से वो हमारे राष्ट्र की धरोहर हैं। मैं प.पू. स्वामिजी का अभिनंदन करते हुए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ , वे

शतायु हों और हमें इसी तरह से प्रेरणा और मार्गदर्शन देते रहें। विशेष करके मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ कि जिस क्षेत्र का मैं जन प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ, वहाँ पर ऐसा संस्कार केन्द्र – जो कि स्वामिनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है, उससे हम लोग भी सदैव प्रेरणा लेकर अपने क्षेत्र में काम करते दफा उन मान्यताओं का ध्यान रख सकें – जो आदर्श हमें प्राप्त होते रहे हैं। मैं आशा करता हूँ – आपका स्नेह सदैव हम पर बना रहेगा और इस क्षेत्र के अंदर आपके कहे अनुसार विकास होता रहे – यही मेरी कामना है। **मेरे योग्य जो भी आदेश प.पू. स्वामिजी करते हैं, मेरा कर्तव्य है – मैं उसका पालन करूँ।** आप ही मुझे इतनी सामर्थ्य दे सकते हैं कि मैं उसका पालन करता रहूँ। बहुत - बहुत धन्यवाद, पुनः आभार !

प.पू. वशीभाई

...देखो, आज सबके मुँह पर – दिल में देखो एक खुशी छा रही है। एवरी बडी इज़ वेरी हॅपी। वो खुशी – जैसे गुरुजी बोलते हैं – काकाजी ने जो काम किया उसकी हम रॉयल्टी खा रहे हैं, हमें रॉयल्टी मिल रही है। जैसे मनोजभाई ने बताया, तीस - चालीस साल का काकाजी का परिश्रम – गुरुजी की साधना है।

स्वामिनारायण भगवान तीस साल गढडा में रहे। सिर्फ १९ वर्ष की उम्र में 'लोज' आए, गढडा में रहे और ४९ वर्ष की उम्र में तो उन्होंने स्थूल शरीर का त्याग कर दिया ! ३० साल में आध्यात्मिकता में इतनी पोटेन्शियालिटी डाली कि आज पूरी दुनिया को स्वामिनारायण का पता चल गया !

अभी मल्कानी साहेब बोम्बे आए थे। वे बोलते थे कि १९६७ में गुरुजी जब फर्स्ट टाईम यहाँ आए, भारत साधु समाज में ठहरे, उसके बाद भी कितने समय तक काकाजी आते थे; उस समय तक – कौन स्वामिनारायण ? कैसे स्वामिनारायण ? किसी को मालूम नहीं था। और आज 'अक्षरधाम' होने तक पूरा 'स्वामिनारायण - स्वामिनारायण' हो गया। बड़े पुरुष कम समय में खूब काम कर जाते हैं। ऐसा – जैसे महाराज ने तीस साल में किया। १९५२ में काकाजी को साक्षात्कार हुआ, १९६६ तक संस्था के साथ रहे। संस्था का काम किया, साधुओं का – बहनों का काम सब किया और १९६६ से १९८६ बीस साल में गुजरात तक सीमित ना रखते हुए उत्तर भारत में ये पूरा गुणातीत समाज का सर्जन किया। अपने जगरांव वाले ने बताया कि फर्स्ट टाईम जब काकाजी आए, तो कितनी विपरीत परिस्थितियों में गुरुजी और काकाजी ने मिल कर यहाँ जो डेरा जमाया, धुनी धखाई और ये सब भक्तों को निहाल कर दिया। ऐसा लगता है कि काकाजी कितनी खुशी से झूमते होंगे ? काकाजी की एक स्टाईल थी; जहाँ भी जाते थे वहाँ से एक कार्ड लेकर पीछे लिखते थे। तो अश्विनभाई को लिखे कार्ड के पीछे 'कोन्कर्ड' विमान था और निर्देश किया था कि 'कॉन्कर्ड' की गति वाले ये सब है। अब उससे भी आगे 'रॉकेट' आए हैं। ऐसे 'रॉकेट' तैयार करने की काकाजी की भावना थी।

...आज ये सेवकों को देख कर मुझे विचार आया कि जैसे एक भजन बनाया था – **'काकाजी की छावनी के सैनिक बन कर जिएं,'** वो भी इन्होंने सिम्बोलिक बता दिया कि ये खाली - खाली सैनिक नहीं खड़े हैं। पर, काकाजी - गुणातीत ज्ञान के प्रहरी, गुणातीत ज्ञान के रखवाले, गुणातीत ज्ञान के सैनिक – हमें ऐसा बनाना चाहते हैं। तो, एक संदेश है, सिम्बोलिकल है कि हम ऐसे सैनिक बनें। वो काकाजी का भाव ऐसी छोटी - छोटी बातों में भी यहाँ दिखता है।

प्रॉब्लम लेकर जो भी हरिभक्त आता है, गुरुजी - दीदी उनमें इतना इन्वॉल्व होकर उसे सोल्यूशन देते हैं, उसको इतना संभालते हैं कि हरिभक्त एकदम फ्रेश हो जाता है। साहेब जिनके वहाँ ठहरे हैं, विजयपालजी वो एक ऐसे भक्त हैं। आपको पता है कि गुरुजी निडर हैं। इतने बड़े - बड़े प्रसंग आते हैं, पर गुरुजी मानते हैं कि प्रॉब्लम छोटे हैं, काकाजी -हमारे भगवान बड़े हैं। परछाईं का जब प्रॉब्लम आया, ऑल ऑफ ए सडन दोनों किडनी फेईल हुई, तो एक नहीं ग्यारह -बारह हरिभक्त बोले कि हम किडनी देने तैयार हैं। बाद में ऑप्रेशन हो गया। उसे दो महीने यहाँ अलग रखना पड़ा। तो गुरुजी ने उसे विजयपालजी के यहाँ रखवा दिया। विजयपालजी ने वहाँ मानो – मिनी हॉस्पिटल बना दिया ! उसका खाने का अलग - पीने की व्यवस्था, दवाई वगैरह सब। और जब दो महीने पूरे हुए, तो जैसे लड़की शादी होकर विदाई होती हो, ऐसे उनकी आँखों में आँसू थे। ऐसे

सब हरिभक्तों के पीछे नए - पुराने सभी के पीछे गुरुजी ने सभी में इतना इन्टरेस्ट लेकर काकाजी की बड़ी भक्ति करी है... सब में ये बहनों ने, गुरुजी ने, संतों ने, भक्तों ने खूब इन्टरेस्ट लिया है। सुहृद्स्वामी जो बनाते हैं – आज बीस साल पहले देखो तो उन्हें कुछ भी नहीं आता था। इतना सीधा साधु, लेकिन गुरुजी ने उसको मोल्ड कर - करके, इतने इनोवेटिव आईडियाज़ दिए कि आज भक्त आते हैं, तो बस – अच्छे से अच्छा खाना खिला कर वो भक्त की मूर्ति लूट लेते हैं, किसी भी तरह उसको खुश करके उसकी मूर्ति लूट लो – बस यही एक लगन रखते हैं। यह मैं लाईव बोलता हूँ। मेरे बैंक के मेनेजर को मैं लेकर आया था। स्टेट बैंक के जनरल मेनेजर थे। वो तो फर्स्ट टाईम आया था। उसे तो मालूम भी नहीं था कि मैं मंदिर में रहने वाला हूँ। पर, उनकी वाईफ ने जो यहाँ आत्मीयता देखी, तो वो रो पड़ीं। गुरुजी ने पुछवाया कि वो रोती क्यों है ? कोई प्रॉब्लम है ? तो बहनों ने बताया कि उसको इतना अपनापन लगा है और दाल -ढोकली जो स्पेश्यिली बनवा कर खिलाई, सो उसकी आँख में आँसू आ गए हैं। यूं, **कोई नया हरिभक्त आए और उसको इतना सद्भाव हो जाए, तो महाराज कितने राजी होते होंगे। स्वामिनारायण भगवान की एक बड़ी सेवा हो जाती है।**

प्रमुखस्वामी महाराज ने भी 'अक्षरधाम' बनवाया है। कई - कितने आदमी देख कर कितना गुण लेकर जाते होंगे कि – ऐसे स्वामिनारायण भगवान ! सो, ऐसा एक्सप्लोरेशन हुआ है। श्री मनोज सोनी साहेब ने पवई की मूर्ति प्रतिष्ठा में बहुत अच्छी बात करी थी कि – घटनाएं बहुत घटती हैं, हमारी आँखों के सामने होती हैं, लेकिन जैसे कि काकाजी बोलते थे कि हम देखते अंधे हैं...! तो कहने का मतलब क्या है कि ये जो भावना है, ये रॉकेट की भावना बोलो या ऐसा समाज – जैसे कि गुरुजी ने कार्ड लिखवाया है कि '**गुणातीत कुनबा**'; **ऐसी कुटुंब भावना जैसे - जैसे बढ़ती जाए, उससे ये स्वरूप हम पर राजी हो जाएंगे।**

और... दूसरी एक बात करके पूरा करता हूँ कि अंतःर्दृष्टि करने की गुरुजी की जो स्टाईल है, वो कैसी है ? उनका जो काकाजी के साथ एकदम खुल्ला संबंध था, आज भी है। आज भी उनको कुछ होता है, तो काकाजी को पूछते हैं और काकाजी उन्हें जवाब देते हैं। १९८४ में काकाजी ने आणंद में एक बड़ी सभी करी थी। वहाँ काकाजी ने इंग्लिश में आशीर्वाद दिये। बाद में गुरुजी ने पूछा कि इतनी बड़ी सभा में – जब सभी गाँव के आए हैं, कोई इंग्लिश समझने वाला नहीं है, आपकी अंग्रेजी कौन समझा होगा ? तो काकाजी तुरंत बोले कि तू समझा ना ? गुरुजी बोले – हाँ। तब, **प.पू. काकाजी ने कहा** मेरे लिए इतना काफी है कि तू समझ गया। **मेरी बात स्टेज पर बैठे तुम लोगों के लिए ही थी !**

तो, आज गुरुजी के चरणों में यह प्रार्थना करनी है कि हे गुरुजी ! समाज बढ़ गया, सत्संग बढ़ गया, लेकिन हम जहाँ हैं - वहाँ से आगे जाएं। हमारे ब्रह्मरूप होने की साधना में हम आगे बढ़े ! प.पू. साहेब भी हमारे लिए जो परिश्रम करते हैं, देख कर आँखों में आँसू आ जाते हैं। गुरुजी को तो रात को एक - दो सहज ही बज जाते हैं। और... उनको आदत है; तो छः बजे तो उठ ही जाते हैं। खुद तो उठ जाते हैं, साथ में सभी को उठा देते हैं। पहले तो मुझे बोम्बे फोन करके उठाते थे कि उठ गया तू ? इनकी भावना है कि तुम जागो - उठो और जहाँ हो वहाँ से आगे जाओ।

तो आज यह प्रार्थना करनी है कि हे गुरुजी ! आप जो करवाना चाहते हो, काकाजी की जो भावना थी, खेवना थी कि हम सब मिलजुल कर 'स्वामिनारायण भगवान' का काम करें और... आज इतना बड़ा समाज, सुहावना वातावरण भी रखा है, ठंडक है तो हमारी आत्मा में, मन - बुद्धि - चित्त में ऐसी ठंडक कर देना यही प्रार्थना ! सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. रामदेवजी महाराज

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुजी, प.पू. साहेबजी, मंच पर आसीन सभी पवित्र आत्मन्... हम सभी उसी ईश्वरीय चेतना के अंश है और हम सब की मंजिल, हम सबका लक्ष्य, हम सबका ध्येय, उद्देश्य एक ही है कि हम भगवान के होकर जिएं और जो भगवत्स्वरूप संत हैं, महापुरुष हैं उनकी आज्ञा में रह करके उनके दर्शन से –

दर्शन माने जिस चेतना में संत जी रहा होता है, जिस विवेक में संत जी रहा होता है,

EXPLORATION - from UNKNOWN to KNOWN
PPG
Spiritual Technicians' Nucleus
EXPLORATION - from UNKNOWN to KNOWN
PPG
Spiritual Technicians' Nucleus
S.T.N.
JAY SWAMINARAYAN

विज्ञान—ज्ञात से अज्ञात की ओर
अध्यात्म—अज्ञात से ज्ञात की ओर

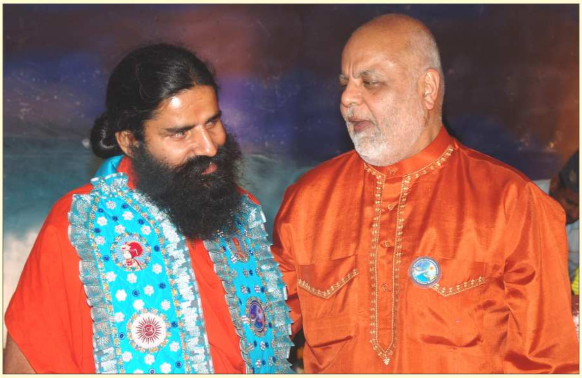

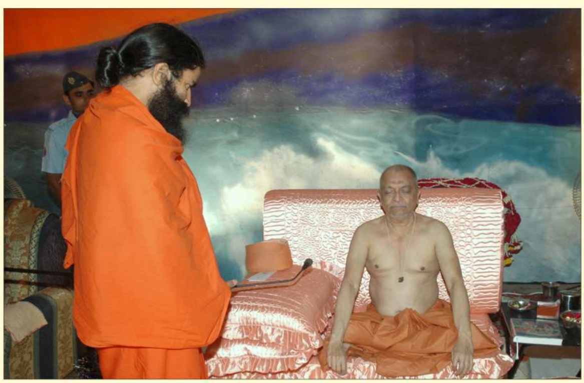

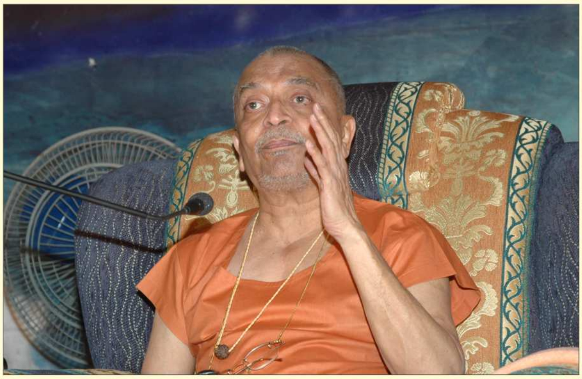

जैसा संत का आचरण, जैसी संत की दृष्टि, जैसी संत की चेतना –
वैसी ही हमारी दृष्टि, हमारी चेतना, हमारा स्वभाव, हमारा चिंतन, हमारा जीवन,
हमारा आचरण, हमारी वाणी और हमारा व्यवहार रुपांतरित हो जाए –
इसको बोलते हैं दर्शन !

और इसलिए 'संत दर्शन' का बहुत बड़ा महातम हमारी भारतीय संस्कृति में है कि हम संतों के दर्शन करते हैं, उनके आशिष लेते हैं। दर्शन करने में भी बहुत से प्रकार होते हैं।

आम भाषा में तो दर्शन का अर्थ होता है – 'देखना' ! एक तो ये भी बोला जाता है – जब किसी से टसक हो जाए, जब किसी के साथ ईगो टकरा जाए – तो आम भाषा में बोला जाता है कि देख लूंगा। तो एक तो 'देख लूँगा' और एक होता है 'देख लिया'। देख लिया मानो – संत के पास आए हैं, तो कहेंगे कि कैसे थे संत ? संतजी के कपड़े बहुत अच्छे थे। और कैसे थे ? एकदम गोरे - गोरे लग रहे थे। और कैसे थे ? उन्होंने ऐसे जूते पहन रखे थे, ऐसी चप्पल पहन रखी थी।

बहुत से लोग मुझे भी देखने आते हैं। दो तरह से देखने आते हैं। एक तो यूं कि सौ - पचास आदमी के बीच बैठा हूँ ना – रामदेव ? तो, मैंने भी देखा है – यह कहने के लिए। घणां बधा जोईने जाए, पछी शुं कहे ? बोले – स्वामिजी को तो मैंने भी देखा है। कैसे ? बोले – बहुत काली - काली दाढ़ी थी। वो मेरा दर्शन नहीं करके गया, वो बाल का दर्शन करके गया। दूसरे से पूछा – कैसे थे ? अरे, बड़ी - बड़ी खड़ाऊ थी। लक्कड़ का दर्शन करके गया !

दर्शन माने संत का जीवन, संत का आचरण, संत जिस संकल्प में जी रहा होता है, वैसा हमारा भी जीवन - हमारा आचरण - हमारा व्यवहार बन जाए। 'मम हृदयं हृदय ते दधामी, मम चित्तं अनुचित्तं ते अस्तु...' गुरु के हृदय से अपने हृदय को जोड़ दें, गुरु के चित्त में अपने चित्त को लगा दें। गुरु की वाणी में अपनी वाणी को समाहित कर दें और गुरु की आत्मा से अपनी आत्मा को जोड़ दें। जीवन में एक लक्ष्य, एक विचार, एक मंजिल, एक राह, एकता - एकरूपता आ जाए।

तो, आज आप सभी यहाँ परम श्रद्धेय गुरुजी के दर्शन, उनके आशिष लेने और हमारी वेद की भाषा में 'जीव शत् शरदं' या भगवान से प्रार्थना करने आए हैं कि गुरु का सान्निध्य जब तक जीवन है, तब तक बना रहे; जिससे कि धर्म की राह पर, भगवान की राह पर, वेद की राह पर, संस्कृति की राह पर, संस्कारों की राह पर चलते हुए जीवन में आगे बढ़े।

आज तो मैं सुनने के लिए आया था, क्योंकि दस - दस घंटे बोल कर गले का हाल ये हो गया था कि मुझे ये था कि आज मुझे बोलना ही नहीं पड़ेगा। इसलिए मन भी नहीं था बोलने का, लेकिन आप **सब के बीच में यहाँ आकर आनंद की अनुभूति हो रही है, प्रतीति हो रही है।** इससे पहले भी मैं आया हूँ, गुरुजी के साथ में एक बहुत ही सुहाना अतीत रहा है।

मैं मानता हूँ कि यह जो वर्तमान युग अभी चल रहा है, विज्ञान में हमने बहुत उन्नति की है और बहुत करनी अभी शेष भी है। लेकिन विज्ञान के साथ - साथ जीवन में धर्म आए, सत्य आए, जीवन में प्रेम जागे, जीवन में वात्सल्य जागे और **हम भगवान के प्रतिरूप होकर के जीएं – यह जीवन की धन्यता है।**

भगवान की सबसे श्रेष्ठ कृति मनुष्य का जीवन है। इससे और श्रेष्ठ और कुछ हो भी नहीं सकता और इससे ज्यादा कोई कुछ ज्यादा दे भी नहीं सकता। तो भगवान ने बहुत कृपा करके हमें मनुष्य का जन्म दिया। जीवन को प्रति पल आनंद के साथ जीएं, जीवन को एक उत्सव की तरह जीएं, जिंदगी की हर भोर एक नया जीवन बन जाए और हर सुबह उठ करके एक संकल्प लें – किस हेतु से परमात्मा ने मुझे इस धरती पर भेजा है ? मैं अपने निहित कर्म को, अपना जो कर्तव्य है, ईश्वर ने जिस धर्म में, जिस कर्म में मुझे नियुक्त किया है उसका मैं निर्वाहन करुँ और प्रतिपालन करुँ – एक आनंद के साथ। प्रतिपालन – एक हौंश के साथ, जागरूकता के साथ, विवेक के साथ जिंदगी को जिएं। निश्चित रूप से जीवन पुष्पित होगा, जीवन कुसुमित होगा और जीवन की महक आएगी और हमारी वाणी से, हमारे स्वभाव से, हमारी दृष्टि से, हमारे कर्म से चारों ओर एक जीवंत वातावरण तैयार होगा।

अब तो जो समय चल रहा है, यह भारतीय संस्कृति का धर्म दर्शन, अध्यात्म उत्कर्ष का समय है। इसको मैं इस रूप में देखता हूँ कि हमने बहुत पतन देखा है और बहुत उत्कर्ष भी देखा है। एक अरब छियान्वे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ पाँच वर्ष पुरानी है भारत की संस्कृति और ये गौरवशाली अतीत होते हुए भी, कहीं ना कहीं मध्यकाल में हमारे ही आलस्य और प्रमाद से कहीं पतन हुआ है। इस देश का इतना गौरवशाली अतीत होने के बावजूद भी आज वर्तमान में वह हमारा गौरव और स्वाभिमान कहीं ना कहीं मिटता जा रहा था। ये हमारे भारत के मनुष्य, ये संत, ये महापुरुष उसी भारतीय मनीषा के उत्कर्ष से इस देश के स्वाभिमान को, देश के धर्म को, देश की संस्कृति को, देश के संस्कारों को जाग्रत करके पुनः अपने उस पुराने भारत की ओर अपने गौरवशाली अतीत को वर्तमान की धरा पर प्रतिष्ठिापित करता हुआ देखना चाहते हैं। और मैं मानता हूँ कि आज देश जाग रहा है – देश करवट ले रहा है और जिस तरह से पूरे देश यानि – आज हम भारत की बात करें, तो भारत जितनी श्रमशक्ति, भारत जितनी प्रतिभा, भारत जितनी संपत्ति पूरे विश्व में किसी और के पास नहीं है। लेकिन कहीं ना कहीं हमारा स्वाभिमान मिट गया था।

संत हमारे भीतर के धर्म को भी जगाते हैं, भीतर के स्वाभिमान को भी जगाते हैं और हमें एक **'अग्नि पुरुष'** बनाते हैं। हमें एक योगी भी बनाते हैं और इस धर्म क्षेत्र में, इस जीवन के कुरुक्षेत्र में हमें सच्चा योद्धा भी बनाते हैं। योगीजी महाराज की परंपरा के ये सभी संन्यासी और उस भारत की संत परंपरा के पू. काकाजी महाराज और उस परंपरा से चले आए इस पूरे के पूरे आश्रम का जो एक गौरवशाली अतीत है, हम ऐसी आशा करते हैं कि आज भी हम अपने एक उस स्वर्णिम भविष्य की ओर आगे बढ़ेंगे। मैं कहा करता हूँ कि हम अपने तप से, अपने पुरुषार्थ से, अपनी भक्ति से, अपनी जान से, अपने कर्म से, अपनी साधना और आराधना से हम एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जहाँ हम सब मिल कर अलग - अलग धर्मों के लोग, अलग - अलग मज़हबों के लोग, अलग - अलग प्रांतों के लोग, अलग - अलग भाषा बोलने वाले लोग – जो कि इस बात को मानते हैं कि हम सब का पिता तो आख़िर एक ही है और हम उस एक ब्रह्म की ओर ही बहे जा रहे हैं और वही हम सब का लक्ष्य और ध्येय है; हम सब उस ब्रह्म की ओर – उस भगवान की ओर – उस अनंत की ओर – जिस एक चेतना की ओर बहना है, उस ओर बहते रहें।

फिर से पू. गुरुजी के प्रागट्य उत्सव पर आज हम यह याचना करते हैं – प्रभु के चरणों में कि – गुरुजी की सौ वर्ष से भी लंबी आयु हो और सब को इनके आशिष सदा मिलते रहें। प्रभु के चरणों में यही प्रार्थना करते हुए कि इन संतों के दर्शन और आशिष पाकर के हमें जिस कर्तव्य – धर्म के लिए भगवान ने यहाँ भेजा है, उसको निभा सकें और अपने जीवन में स्वयं सुख, शांति, समृद्धि पाकर इस भारत को भी इसका खोया हुआ गौरव लौटा सकें। मैं मानता हूँ कि हम सब के पुरुषार्थ से, प्रयत्न से, हम सब की भक्ति, आराधना और साधना से यह देश का गौरवशाली अतीत वर्तमान पर फिर लौटेगा। और यह देश – भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा और भारत को हम सबसे बड़ी आध्यात्मिक और आर्थिक शक्ति के रूप में प्रतिस्थापित कर सकेंगे।

सब को मेरा पुनः वंदन। सभी के भीतर विराजमान भगवान को मेरा नमन। पू. साहेबजी को भी प्रणाम। पू. साहेबजी एक महीने पहले से ही कह रहे थे कि आप उस दिन दिल्ली में होंगे। कल मेरा – उसको प्रवचन तो नहीं कहूँगा, क्योंकि प्रवचन की भाषा थोड़ी अलग होती है – वो अंग्रेजों के बीच, अंग्रेजो की भाषा में लेक्चर है मेरा – सायन्स के ऊपर कि आज पूरी दुनिया जो है वो सूक्ष्मता की ओर जाना चाहती है और हमारे मनीषी तो इसी सूक्ष्म तत्त्व की अन्वेषणा किया करते थे। ज्ञात से अज्ञात की ओर, अज्ञात से ज्ञात की ओर। भारतीय दर्शन था – 'यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे'। हमारे मनीषीयों ने आज से करोड़ों वर्ष पहले ही जीवन के उस विज्ञान में प्रवेश किया था, जिसके बारे में अभी आधुनिक विज्ञान सोच रहा है। उस हेतु से मेरा आगमन हुआ और आज पू. गुरुजी के भी आशिष मिले। पू. गुरुजी के चरणों में आज पुनः वंदन, इनको प्रणाम; ॐ शांतिः - शांतिः।

प.पू. गुरुजी

...स्वामिजी ! गुजरात में एक कहावत है – 'मीठे दरख़्त की जड़ नहीं काटी जाती'। इतने खूब व्यस्त प्रोग्राम होने के बावजूद भी हमारे एक फोन पर – साहेब के कहने पर आप यहाँ आ गए... सबसे पहले तो – **'धॅर आर नो वर्ड्स, टु एक्सप्रेस अवर ग्रेटीट्यूड'** ! फिर भी, अभी मैं ये कहूँगा कि अगर आपको अगर जल्दी जाना है, तो आप जरुर निकल जाइए। क्योंकि अभी सवा दस बज गए हैं – इसलिए मैं कह रहा हूँ।

...अब की बार जब कार्ड का मेटर तैयार हुआ, तो इंग्लिश चॅक करने मल्कानी के पास भेजा था कि इंग्लिश में सही ट्रान्स्लेट किया है या नहीं देखो। इन्होंने तब मुझे कहा कि पहले तो जो लिखा है ना कि पाँच से नौ बजे तक, उसकी बजाय ऐसे लिखो – फाईव पी.एम. ऑन वर्ड्स ! कभी भी नौ बजे तो तुम्हारी सभा पूरी होती नहीं है।

तो, अभी आप जैसे कहो, वैसे मैं करुँ। हम सीधे प्रसाद लेने चले जाएं या मैं बात करुँ ? क्योंकि साढ़े दस बजे हैं, तुम्हें भी भूख लगी होगी, मुझे भी लगी है। (और...जब पू. राकेशभाई ने कहा कि अभी 'केक कटिंग' तो बाकी है ! तब) केक कटिंग का तो मैंने सोच लिया है कि आज सभा में नहीं करेंगे। रात को बारह बजे हम लोग कर लेंगे। जिनको केक का प्रसाद लेना हो, वो कल आ जाना, बचा कर रखेंगे। तो क्या करें ? सभा डिस्पर्स कर दें ? साढ़े दस बजे हैं ना – इसलिए मैं थोड़ा चिंतित हूँ। फिर हमारी सभा में कोई आएगा नहीं कि इनके यहाँ बड़ा लॅट हो जाता है।

आज जब ये सारा प्रोग्राम बना, तो मुझे एक बार ज्योति बहन ने जो बताया था - वह याद आ गया। ये बात है १९५४ की, जब ताड़देव में वे बहनें वगैरह सब साथ में रहते थे। उन्होंने बताया कि 'महाशिवरात्रि' के दिन – ऊपर काकाजी सोफे में पूजा कर रहे थे और मैं पाँव छूने गई। काकाजी ने एकदम पूछा – 'शुं छे आजे ?' तो ज्योति बहन ने कहा कि आजे मारो जन्मदिवस छे। काकाजी ने एकदम कहा कि ज्योति जीवे छे हजी ? ज्योति मरे पछी जन्मदिवस उजववा आवजो।

ये सारी बातें सुन कर मैं तब से सोच रहा था कि एक ओर ये बातें हैं और क्या चल रहा है ! बेशक, ये बात मेरे दिमाग में पिछले डेढ़ महीने से चलती रहती थी। मैं भी सोचता था कि मुझे ये विचार क्यों आ रहा है बार - बार ? एक - दो बार कहलवाया भी कि ये फंक्शन इस बार रहने दो। वैसे मेरी नीयत भी थोड़ी खराब थी। सच बता रहा हूँ। ये बहनों के आश्रम का काम चल रहा है ना ? मुझे ऐसा था कि ये लोग मान जाएं, तो ये जो फंड - फंक्शन के लिए इकट्ठा किया है, वो अक्षरज्योति के कन्सट्रक्शन में पोर कर देंगे। पर, ये माने नहीं।

यहाँ एक बात जरुर है कि **यदि हम सब कुछ भगवान पर छोड़ देते हैं और अपनी नीयत साफ कर लेते हैं, तो भगवान भी सहाय करते हैं।** मैंने सोचा – भले इनको जो करना है, वह करे। फंड के लिए हम और ज्यादा झोली फैलाएंगे। अभी - अभी हम विद्यानगर गए थे। मुझे तो दरअसल वो शांताबा वगैरह का कुछ ख्याल ही नहीं है। एक बार दिल्ली आए होंगे, आनंदी से मिले होंगे और सहज कहा होगा कि बा यहाँ आश्रम बना रहे हैं। और... अबकी बार ये बहनें भी वहाँ होंगी, तो वो शांताबा ने एकदम कह दिया कि साहेब, ये इनके अक्षरज्योति के लिए मैं कुछ एमाऊंट गुरुजी को भेजना चाहती हूँ ! इस बात में दो पहलू हैं – जैसे मैंने कहा कि हमने भगवान पर छोड़ दिया, तो भगवान ने सहाय भी कर दी। दूसरी ओर मैंने सुना है कि शांताबा को **अश्विनभाई** के प्रति खूब प्रीति है। अश्विनभाई ने उन्हें जरुर महिमा की बातें करी होंगी कि अपना सेन्टर है...वगैरह। तब वो शांताबा... वर्ना शांताबा से हमारा कोई परिचय नहीं। तो आज के दिन सबसे पहले तो मैं अश्विनभाई का खूब शुक्रगुज़ार हूँ कि **हरिधाम** के अंदर **जाहिर सभा में** करीब पचास - साठ हज़ार लोग इकट्ठे थे, तब जो **बात प.पू. साहेब ने करी** कि **आपणे आ आत्मीयता डॅवेलप करवी छे। साहेब बहुत क्लीयरली बोले – नथी, याद राखो आपणे डॅवेलप करवी छे। इस ओर हम सब ने कदम बढ़ाना शुरु कर दिया है।** हम जानते हैं कि हम गलती खा गए हैं। पर, गलती सुधार कर चलना है। तो काकाजी के चरणों में सबसे पहले प्रार्थना है कि हम हमेशा ऐसे सिंह की भांति आगे चलते जाएं। सिंह आगे चलेगा, तो पीछे देखते हुए चलेगा - यूं हम अंतर्दृष्टि करके चलते रहें। और तब जाकर ऐसा एक समाज डॅवेलप होगा।

आज आप सब जो देख रहे हो – साढ़े दस बज चुके हैं। हज़ार - पंद्रह सौ आदमी का गेधरींग वो बड़ी बात नहीं है। लेकिन **वो पंद्रह सौ आदमी के अंदर अस्सी प्रतिशत लोग एक - दूसरे को जानते होंगे, बीस प्रतिशत ही ऐसे होंगे जो नए आए हों !** शायद एक - दूसरे को करीब से नहीं जानते होंगे। बाकी तो, मानो – **पंद्रह सौ जनों का ये एक फॅमिली बैठा हुआ है** और ये जो बीस प्रतिशत अभी हैं, वो भी दो - चार साल के अंदर अस्सी प्रतिशत के अंदर शामिल हो जाएंगे।

इसका जीता - जागता उदाहरण हमारे मल्कानी हैं। वच्छराज ये बात जानता है। ८४ - ८५ की बात होगी। मल्कानी नए - नए कॉन्टेक्ट में आए थे। ८४ की लास्ट में या ८५ की शुरुआत में – उन्होंने आना शुरु ही करा था। हमने मल्कानी को कहा कि ये हमारा अन्नकूट होता है, आप आरती करने आना। वैसे वे सरल हैं। तो इन्होंने 'हाँ' कर दी। हमने कार्ड में इनका नाम भी छापा और वच्छराज को कहा कि इनके कोई बिज़नेस रिलेशन्स में हों, तो मल्कानी का नाम है -जहाँ भेजना हो वहाँ भेज देना। इन्होंने मनुभाई इत्यादि को कार्ड भेजे थे। कार्ड वहाँ गया तो इनको ताज्जुब लगा कि मल्कानी वहाँ आरती करने जाने वाले हैं ? और... वच्छराज को पूछा कि कितने में आरती उतारी ? वच्छराज तो बात को समझा नहीं, क्योंकि ये ट्रेडिशन अपने यहाँ है ही नहीं। उसने मुझे आकर बात करी। तो मैंने कहा था, बोल देना –'होलसेल में हमारा हो जाए' – इतने में आरती उतारी। **आज हम वो देखते हैं कि मल्कानी होलसेल हमारे हैं।** ये मल्कानी का तो मैंने एक एग्ज़ाम्पल दिया है। बाकी ये सारा समाज काकाजी ने ऐसा डॅवेलप करा है। बेला रोड से एक बार संत लोग आए थे। मंदिर देखा, खुश हो गए - करे। मैंने कहा कि वहाँ बेला रोड का मंदिर भी बहुत अच्छा है, हमारा तो अभी अधूरा है। साधु बहुत अच्छे थे; उन्होंने कहा – गुरुजी, ये मंदिर में और उस मंदिर में काफी फर्क है। गुजरात से हम पैसे ले आए और फटाफट मंदिर बांध दिया – वह बात अलग है। यहाँ तुम्हारा एक समाज ऐसा खड़ा हो गया है और उन्होंने यह मंदिर बांधा है, वो बहुत बड़ा फर्क पड़ गया है।

ऐसे जो समाज का सर्जन काकाजी ने खूब परिश्रम ले करके यहाँ किया है। मैं दिल से मानता हूँ कि **आज जो कुछ कम्फर्ट्स यहाँ नज़र आती है, वो तो काकाजी ने उठाई ज़हमत की - परिश्रम की हम रोयल्टी खा रहे हैं** और कुछ है नहीं। मैं तकरीबन हर बार बात करता हूँ कि **संतों के प्रति, मंदिरों के प्रति, आश्रमों के प्रति पूज्यभाव रखना – वो हमारी संस्कृति है।** लेकिन, **जो 'अपनापन' होना वो अलग बात है।** उसे हम हमेशा - हर जगह डॅवेलप करते रहें। आज आप लोगों ने देखा होगा कि रामदेवजी महाराज कितने व्यस्त होते हैं कि फोन पर भी वे ज्यादा मिल नहीं सकते। पर, साहेब ने उनके साथ ऐसा अपनापन डॅवेलप किया होगा, तो फट् से हम लोगों से फोन पर भी बात कर लेते हैं और आज हमें इनको कहना पड़ा कि आपको जाना हो, तो जरुर चले जाओ – क्योंकि आपको काफी काम है। कल विज्ञान भवन में इनकी काफी बड़ी मीटिंग है। तो ये डॅवेलप करना है और असल में महाराज ने हमारे लिए उसे मोक्ष का द्वार बताया कि – ऐसे भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि वो ही एक 'सत्संग' है।

हम कई बातों को समझते नहीं हैं। बड़े संत अपने जीवन – अपने चरित्र द्वारा ये समझाते हैं। गुणातीतानंदस्वामी का एक प्रसंग हम थोड़े दिन पहले ही पढ़ रहे थे – तब मैंने यह बात समझाई थी। एक बार स्वामी जूनागढ़ में सभा करके बैठे थे। जन्माष्टमी का दिन था और बोटाद से मंडल आया था। जन्माष्टमी यानि – बारिश की सीझन होती है। बारिश में सब गीले हो गए थे। तो गुणातीतानंदस्वामी ने कोठार में से थान के थान फड़वा कर हर एक को कपड़ा दिया कि सब भीगे हो, तो – कपड़े बदल लो और कहा कि – अब तुम्हारी जन्माष्टमी पूरी हो गई; कोठारी खिचड़ी बनाएंगे और आप लोग खाना खा लो। देखो, ये जो आत्मीयता - अपनेपन की जो भावना, वो स्वामी ने अपने जीवन में हर पल दिखाई हुई है। ऐसे प्रसंगों को हम कई बार नहीं समझते हैं। स्वामिजी की 'दयालु प्रकृति' पर यह फोकस नहीं था; संत तो दयालु होते ही हैं। पर, **एक अपनापन कि हमारे सत्संगी आए हैं - हमारा परिवार आया है - थका हुआ है -ठंडी में कांप रहा है, इनको कपड़े बदलने देने हैं। इसी लाईन पर सत्संग को बढ़ाना है।**

आप पूछोगे कि ये क्यों करना है ? देखो, सब जगह बोला जाता है – **'ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'** ! पर कोई मानता नहीं है। जबकि **अपने यहाँ ये पोसीबल है।** ये एकदम नया फिनोमिना है। ये रॉकेट जो यहाँ बनाया हुआ है। उससे हमें मेसेज मिलता है कि ये एक नई डॅवेलपमेन्ट हुई है - स्पीरीच्युआलिटी के अंदर – जो आज तक नहीं थी। गुणातीतानंदस्वामी

ने भी इस बात का इशारा अपनी बातों में दिया है। वो बोले थे – **दूसरी जगह जो काम करोड़ जन्म अंतर्दृष्टि करके भी नहीं होता, वो यहाँ एक दिन में होता है। यह बात आज के विज्ञान की टेक्नोलॉजी से मिलती - जुलती है ! कई समय तक जो केलक्यूलेशन्स, जो मेन्यूप्लेशन्स आप मेन्यूअली ना कर पाओ, वो अब कम्पयूटर से खूब कम समय में हो जाता है।** ये जैसे सायन्स की टेक्नोलॉजी में एड्वान्समेन्ट है; वैसे स्वामिनारायण ने अक्षरब्रह्म को मानवस्वरूप में धरती पर लाकर ये एक एड्वान्समेन्ट करी है।

लेकिन ये बात हमारा भेजा एकदम मानता नहीं है, क्योंकि शास्त्रों की तंती अंदर भर गई है। उसने हमें बांध लिया हुआ है। लेकिन हम सोचें कि ये बात क्या है ? हम देखते भी हैं कि जो काम महीनों से नहीं हो सकता था, वो कम्पयूटर घंटों में फट् से कर देता है। तो, ये गुणातीतानंदस्वामी ने ऐसी ही कई बातें करी हैं। लेकिन, कहते हैं ना कि **'लॉ ऑफ इनर्शिया'** है ! सो, भेजा ये मानने को ही तैयार नहीं।

एक बात हम समझें कि ये संतों को हमारे साथ ऐसी क्या दुश्मनी होगी, जो हमें ऐसी गलत बातें करेंगे ? सालों पहले बोम्बे में बना हुआ यह इन्सीडन्स है। एक फैक्टरी में से एक वर्कर ने कुछ छोटे - छोटे रोड्स चुराए और घर लेकर गया। घर में वो आले में रख दिए - करे। धीरे - धीरे उसकी जाँघों में दर्द शुरु हुआ और वो एकदम बढ़ने लगा। डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर को भी समझ नहीं आया, तो 'एक्स रे' करवाया। फिर डॉक्टर ने उसे पूछा कि आप कहाँ बैठे थे ? तो उसने कहा – मैं रोज फैक्टरी में बैठता हूँ - वहीं। फिर पूछा कि आपने जाँघों पर कुछ बांधा - करा था ? चोरी करी थी – उसका तो उसे ख्याल ही नहीं आया। फिर खूब सोचने - करने पर याद आया कि मैं जेब में थोड़े रोड्स ले आया था। वो रॉडस रेडियोएक्टिव रोड्स थे ! तो, रेडियोएक्टिव रेईझ ने अंदर की हड्डी पिघाल दी थी ! रॉडस ऑर्डिनरी जैसे ही लगते थे। **इस तरह ये बातें - ये मुक्त हमें ऑर्डिनरी जैसे लगेंगे। हमारा भेजा उनकी दिव्यता को एक्सेप्ट नहीं करेगा।** पर, सोचें कि – महाराज को कसम खाने की जरूरत क्यों पड़ी कि इस बात में मैं तनिक भी झूठ बोलता हूँ, तो मेरे परमहंसों की सौगंध है। दूसरी बात – मैं आपको गलत बातें करके क्यों धोखा दूँगा ? आप लोग ही तो मुझे सहायक हो, सपोर्टिव हो। जब - जब मैंने झोली फैलाई होगी, आपने भर देने में कभी भी कोई कसर नहीं छोड़ी। परछाईं के ऑप्रेशन के टाईम पर भी जब मैंने कुछ माँगा - करा...। और...मेरा नॅचर भी तुम जानते तो हो – विजयपाल इसका साक्षी है। जब परछाईं को दूसरी बार अमदावाद भेजना हुआ, तो प्रोग्राम सडनली तय हुआ था – दस - साढ़े दस बजे। एक बजे के प्लेन से उसे भेजनी थी। तो मैं सोचूँ - करूँ उससे पहले विजयपाल ने सोचा कि दस बजे हैं और गुरुजी प्लेन की टिकीट की एरेन्जमेन्ट कर रहे हैं। मंदिर में तो पैसे एकदम होंगे नहीं। परछाईं उस समय विजयपाल के यहाँ थी। सो, विजयपाल का फोन आया कि गुरुजी इसके लिए कितने पैसे दे दूँ स्वाति को ? मेरी आँखों में पानी आ गया कि कैसे ये आत्मीय सेवक ?

तो, मेरा कहना यह है कि काकाजी ने जो मौज दी हुई है, बख़्शिश दी हुई है, रॉयल्टी दी हुई है, वो हम भुगतते हो जाएं – ऐसे साहेब आज आशीर्वाद देकर जाएं। प.पू. साहेब के लिए भी – मैं पिछले पाँच - छः साल से देखता हूँ। पप्पाजी नहीं आते हैं, स्वामिजी की भी तबियत कभी ऐसी - वैसी हो जाती है। सो, वो वेक्यूम यहाँ ना रहे इसीलिए प.पू. साहेब हमेशा आते रहे हैं। मेरी यह प्रार्थना भी है कि हमेशा आते रहना, क्योंकि मैंने पहले भी एक बार बात करी थी कि मेरा मिज़ाज वैसे स्वतंत्र है, फिर भी मुझे आदत है – उंगली पकड़ कर चलने की ! फिर भले मेरे ढंग से चलने के लिए मैं उसे खींचूगा कि तुम मुझे इस तरफ ले जाओ। सो, साहेब से प्रार्थना है कि हर साल ऐसे आते रहें – हर साल नहीं, साल में कई बार आते रहें, हम सब को लाभ दें - उष्मा देते रहें – ऐसी प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय !

प.पू. साहेब

प.पू. गुरुजी के प्रागट्य की सभा के अध्यक्ष प.पू. रामदेवजी महाराज, प.पू. गुरुजी, संत लोग, प.पू. मल्कानी अंकल, प.पू. मनोजभाई, प.पू. इन्दुकाका और मंच पर विराजमान सभी अक्षरमुक्तों और सभा में विराजमान सब व्हाले अक्षरमुक्तों...

प.पू. गुरुजी की प्रागट्य सभा में आज रामदेवजी महाराज पधारे, सोने में सुगंध आ गई। वो कह रहे थे कि गला बोलने की 'ना' बोलता है, पर जब भारतीय संस्कृति के संतों की बात आती है, तो उनका गला अपने आप खुल जाता है। बहुत अच्छी बात बताई, आशीर्वाद भी दिए। हमारा सब का सौभाग्य है कि जब स्वामिजी ने भगवे वस्त्र नहीं पहने थे, तब से गुजरात में हमारे साथ रहे हैं, बहुत आनंद किया है। उनके प्रेम के कारण ही प.पू. शंकरदेव महाराज ने जब हरिद्वार में उन्हें भगवे कपड़े - संन्यास दिया तब हमें हाज़िर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बहुत ऊँचाई पर पहुँच गए हैं; लेकिन उनमें जो साधुता है, जो प्रेम है, जो वात्सल्यभाव है, साहजिकता है, सरलता है वो बढ़ती ही जा रही है। ऐसे साधु का दर्शन होना, यह बहुत बड़ी मूड़ी भारत वर्ष की है। ऐसे संत लोग मिलना, उनका दर्शन होना, उनका आशीर्वाद प्राप्त होना वो हमारे जीवन की सार्थकता है। वो तो पटना में थे। बात हुई थी कि गुरुजी का प्रागट्य दिन है और आप दिल्ली में हैं, तो जरुर पधारें। वो बोले कि मैं जरुर आऊँगा। इतना बीजी स्केड्यूल है उनका, करोड़ों लोग उनके प्रति देख रहे हैं कामकाज के लिए। फिर भी समय निकाल कर ये सभा में आए – यह बताता है कि स्वामी रामदेवजी को हमारे प्रति - गुरुजी के प्रति कितना भाव है ? स्वामिनारायण भगवान, योगीजी महाराज, काकाजी के प्रति के भाव का दर्शन होता है। बहुत - बहुत आभारी हैं हम।

स्वामी रामदेवजी ने बताया कि – साधु बहुत बड़ी मूड़ी है भारत वर्ष की। हम सब की सुरक्षा के लिए हजारों - करोड़ों रूपये का रक्षामंत्रालय को हर साल बजट मिलता है। इससे हम निश्चिंतता से भारत वर्ष में जी सकते हैं। आर्मी के लिए खर्च होता है। लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति - हमारे जीवन में जो आंनद, शांति है, उनके प्रोटेक्शन के लिए तो सरकार कुछ नहीं कर पाती। यह कर पाती है – भगवान की नारायणी सेना – संत लोग ! बिना कुछ लिए हुए – बिना कोई बजट बनाए हुए पूरी नारायणी सेना भारतीय परंपरा को उजागर कर रही है। उसका सिंचन करके पूरे भारत वर्ष में आनंद का एक मौज फैला रही है।

गुरुजी के सान्निध्य में रह कर युवकों ने यह किया है। युवकों को इसमें आनंद आता है। आप उसे बिठाओ, दो - दो, चार - चार घंटे ध्यान कराओ। पर, अपनी शक्ति को भगवान के प्रति बहाना वो भी 'ध्यान' है। तो, युवकों ने आज स्टेज पर जो अपनी भक्ति अदा करी, वो साधु करवा सकते हैं। ऐसे साधु के सान्निध्य में रहने से भीतर का भाव बदल जाता है। हम सब को बदलने के लिए राम, कृष्ण, महावीर, स्वामिनारायण भगवान मानव रूप में आए। स्वामी रामदेवजी ने बताया कि कोई भी जाति हो, कोई भी धर्म हो, कोई भी प्रांत हो, लेकिन भगवान की श्रेष्ठ कृति हम सब मानव हैं। वो मानव आपस -आपस में प्रेम नहीं करेंगे, आपस - आपस में एक - दूसरे को हेल्प नहीं करेंगे, तो भगवान किस तरह से राजी होंगे ? किसी तरह से राजी नहीं होंगे। एक बाप के चार - पाँच लड़के इकट्ठे होकर यदि नहीं रहते हैं, झगड़ते हैं, मारपीट करते हैं; तो कोई बाप यदि आलीशान राजमहल में भी हो, तो भी सुखी नहीं हो सकता। झोंपड़ी में रहो, आपस - आपस में प्रेम से रहो; तो फिर माँ - बाप खुश होते हैं। हम सब मानव भगवान के पुत्र - पुत्री हैं। एक होकर रहते हैं, तो भगवान प्रसन्न होते हैं। वो सिखाने के लिए ही राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, स्वामिनारायण आए। भगवान स्वामिनारायण की विशेषता यही है कि उन्होंने वरदान दिया कि मैं ऐसे '**गुणातीत**' साधु द्वारा पृथ्वी पर अखंडित रहूँगा - रहूँगा - रहूँगा। **उसके योग में आने से भीतर का भाव बदल जाएगा।**

और... ज्ञात से अज्ञात तक और अज्ञात से ज्ञात तक। विज्ञान - विशिष्ट ज्ञान है। हम जानते हैं कि कोई भी फल पेड़ से पृथ्वी पर आता है; नीचे आता है ऊपर नहीं जाता। हमको सिर्फ इतना ही ज्ञान है कि नीचे ही गिरता है। उसके बारे कोई विशिष्ट ज्ञान हमको नहीं है। न्यूटन ने हमको विशिष्ट ज्ञान दिया कि फल नीचे क्यों आता है। तो, एक बल है – पृथ्वी का एक बल है, जिसको हम कहते हैं – ग्रॅविटेशनल फोर्स। ग्रेविटेशनल फोर्स के कारण फल पृथ्वी पर गिरता है। तो, वो जो फोर्स का ज्ञान मिला – विशिष्ट रूप से ज्ञान मिला, उसको हम विज्ञान कहते हैं – सायन्स कहते हैं। यह जो भौतिक - मटिरियाल्सिटिक ज्ञान है, वो विज्ञान है। और... हमारे भीतर भी एक पूरा वर्ल्ड है - आंतरिक जगत है। उसका जो ज्ञान है, वो स्पीरीच्युअल सायन्स है। और... '**संत**' **स्पीरीच्युअल सायन्स के बड़े प्रोफेसर हैं। भगवान को जानना, वो ही श्रेष्ठ ज्ञान है और वो भगवान सब में हैं, वो पाना – यही हमारा आनंद और शांति का साधन है।** ये कैसे पा सकेंगे ? तो, पहले

जहाँ भगवान हैं वहाँ देखो, फिर भगवान दिखाई देंगे। तो **भगवान कहाँ है ? भगवान ऐसे साधु में प्रगट हैं। ऐसे संत जो सहज हैं, सरल हैं, निर्मानी हैं, निःस्वार्थ हैं** – अपने लिए नहीं, वो सब के लिए जीवन जीते हैं; ऐसे साधु जो तीन देह, तीन गुण, तीन अवस्था से परे है – ऐसे साधु में भगवान पूर्ण रूप से खिलते हैं। उनमें भगवान देख कर उनका 'दर्शन' करो।

स्वामी रामदेवजी ने सही रूप में बताया। दादुकाका भी कई बार पूछते थे कि आपने योगीजी महाराज के 'दर्शन' किए ? सामने बैठने वाले सब योगीजी महाराज के पास ही बड़े हुए थे। तो, वे बोलते हैं कि काका आप कैसी बात करते हो ? योगीजी महाराज ने हमें दीक्षा दी, योगीजी महाराज ने हमें धब्बा दिया, योगीजी महाराज की हमने सेवा करी और आप पूछते हो कि आपने योगीजी महाराज के 'दर्शन' किए हैं ? स्वामी रामदेवजी ने बताया – योगीजी महाराज की फिज़िकल बॉडी ने क्या पहना है ? पाघ पहनी है, कपड़े पहने हैं - वो दर्शन भी दर्शन है। लेकिन अध्यात्म सायन्स यह बताता है कि योगीजी महाराज में प्रभु रहे हैं। वो बोलते हैं तो उनके द्वारा प्रभु बोलते हैं, वो चलते हैं तो उनके द्वारा प्रभु चलते हैं। वो पानी पीते हैं तो उनके द्वारा प्रभु पानी पीते हैं। यूं, उन्हें प्रभु के स्वरूप में देख कर वो जो गुण बह रहा है, उनमें हम स्नान करेंगे तो हम खुद प्रभु रूप बन जाएंगे।

सही रूप में गुरुजी ने योगीजी महाराज के ऐसे दर्शन किए, योगीजी महाराज के साथ रहे और योगीजी महाराज की आज्ञा में जीवन बिताया, तो वो खुद योगीरूप बन गए। लाखों लोगों ने योगीजी महाराज के दर्शन किए, लेकिन – गुरुजी, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामी, प्रमुखस्वामी, हरिप्रसादस्वामी ने सही रूप में - जैसे स्वामी रामदेवजी महाराज ने बताया वैसे योगीजी महाराज के 'दर्शन' किए – तो हमारे लिए योगीजी महाराज स्वरूप बन गए हैं। ऐसे दर्शन हम गुरुजी के करेंगे, तो हम गुरुजी रूप बन जाएंगे।

हमारे मानव जीवन की सार्थकता ये है कि भीतर पूरा जगत बदल जाना चाहिए। श्रीमद् भागवत् में बताया है कि नदी पार करनी हो, तो नाव चाहिए। नाव पानी में जाती है और नाव हमको पार कर देती है। पानी में नाव है, लेकिन नाव में पानी होता तो हम डूब जाते। हमें संसार में रहना है, संसार से भागना नहीं है। हिमालय की चट्टान पर नहीं जाना है। गुरुजी, रामदेवजी महाराज सब संसार में ही फिरते हैं। लेकिन हम में और उनमें फर्क क्या है ? कि – हम संसार में रहते हैं, पर हम में संसार भरा है, इसलिए हम डूब जाते हैं। ये साधु - संत संसार में रहते हैं, लेकिन भीतर में संसार नहीं है। भीतर केवल प्रभु हैं; तो जो भी आता है तो उनके भीतर से संसार निकाल देते हैं। वो ही हमारी साधना है।

संसार छोड़ना नहीं है, भीतर रहे संसार को बदलना है - डिवाईन बनाना है। पर, ऐसी दिव्यता को पाए हुए संत लोगों के साथ जुड़ जाना चाहिए। प्रेम से जुड़ जाना चाहिए - भाव से जुड़ जाना चाहिए। प्रभु का रूप मान कर उनमें जुड़ जाना चाहिए और उनकी आज्ञा में रहने से हम अपने आपको बदल पाएंगे।

काकाजी की आज्ञा से गुरुजी दिल्ली आए। कुछ नहीं था - शून्य था। स्वामिनारायण का नाम भी जानने वाला कोई नहीं था। रामदेवजी महाराज जब गुजरात में आए तब उन्होंने 'स्वामिनारायण' का नाम सुना। **आज से चालीस साल पहले स्वामिनारायण का नाम गुजरात के बाहर नहीं था। उस टाईम ये गुरुजी दिल्ली में आए थे और सब उनके धर्म - नियम सुन कर आश्चर्यचकित रह गए।** पर, **आज देखते हैं कि गुरुजी ने अपनी साधुता के द्वारा प्रभुता पाई है।** कई युवानों - कई गृहस्थों का जीवन बदल डाला है। **विजयपालसिंह के यहाँ मुझे ठहरना होता है, तो घर पर ऐसा नहीं लगता कि दूसरे के घर पर हम रहते हैं।** ऐसा भक्ति से भरा हुआ आत्मीयभाव - ऐसा सुहृद्भाव ! ऐसा गृहस्थों का जीवन बदल डाला।

संसार में रहते हुए भी संसार में विरक्तभाव कैसे आ जाएगा ? कुछ छोड़ना नहीं है, संसार में रहना है। बिज़नेस बंद नहीं करना है, नौकरी छोड़नी नहीं है - ज्यादा करनी है। पर भीतर का भाव बदल कर भगवान और भगवान के भक्त के लिए करना है। स्वामी रामदेवजी ने सही बताया कि मानव भगवान की श्रेष्ठ कृति है। उनको अच्छा बनाने के लिए जो भी करो वो भगवान की पूजा है – हमारी भक्ति है – यूं मान कर करो। ऐसी भक्ति करने वाले – ऐसे गृहस्थ के घर में –विजयपाल के घर में हम गए तो, वहाँ वो प्रेम देखा, भाव देखा, विशेष रूप में जो भक्ति देखी – वो गुरु का कार्य है। इससे मालूम होता है कि **गुरुजी ऐसे संत हैं – जिसके प्रभाव में आने से गृहस्थों का जीवन भी ऐसे संसार में रहते हुए भी भक्ति से भर गया और संसार निकल गया।** स्वामिनारायण भगवान ने वो बताया कि ऐसे साधु मिल जाने पर हमारा जीवन अच्छा बन जाता है।

तो, गुरुजी का प्रागट्य पर्व है, हम प्रार्थना करते हैं कि उनकी तबियत अच्छी रहे। पहले स्वामी रामदेवजी जब इधर आए थे और गुरुजी को कपालभांति, भस्त्रीका सिखा गए थे। तो गुरुजी ने बताया कि – कपालभांति करने से मेरी कमर दो इंच कम हो गई। मैं हर रोज करता हूँ, आज भी एक घंटा किया।

कई सालों से भारत में योग प्रचलित है, लेकिन बहुधा करोड़ों लोगों को जो योग में दिलचस्पी करवा दी – सब को योग करना सिखाया, वो बहुत - बहुत धन्यवाद स्वामी रामदेवजी महाराज – आपको है ! पूरे भारत वर्ष में ! आपने बिहार को धन्य बना दिया... वो आपके संतत्त्व का दर्शन है, साधुता का -निःस्वार्थभाव का दर्शन है और वो देख कर, जान कर हम - पूरा देश आपके प्रति गौरवान्वित हो रहा है। पतंजलि योग का उद्‌घाटन हो रहा है, बहुत बड़ी भेंट भारत वर्ष को स्वामी रामदेवजी दे रहे हैं। उनके कपड़ों में कोई जेब भी नहीं है। हमारे पास जेब होती है, कुछ रखते हैं। उनके पास जेब भी नहीं है। दो सौ - चार सौ करोड़ का एक आलीशान सर्जन करके वो भारत वर्ष को लोकार्पण कर रहे हैं। इसलिए उनमें शामिल होने के लिए हम जा रहे हैं। तो ये साधु का कार्य है। कैसे फकीर जैसे साधु ? उनके पास कुछ नहीं है। खड़ाऊ भी तो लकड़ी की पहनते हैं; लेकिन चलते हैं, तो आस - पास के लोग गद्‌गद् - भावान्वित हो जाते हैं। ऐसे साधु हमारे जीवन में आए, वो हमारे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य है।

यूं, आज गुरुजी भी हमें ऐसे साधु के रूप में मिले। दिल्लीवासियों को बहुत बड़ी भेंट भगवान ने दी है। शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था कि **'अक्षरपुरुषोत्तम उपासना'** का मंदिर बनाना। गुरुजी ने इधर '७० से धुनी धखाई और यह मंदिर बनाया... अब 'अक्षरधाम' भी बना। तो स्वामिनारायण संप्रदाय और साधु लोगों को सब जानते हैं। ये सब चलता रहेगा। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है, लाखों का मंदिर बनेगा, सोने की मूर्ति बनेगी, सोने का मंदिर बनेगा। लेकिन यह साधु है, वो नहीं मिलेगा। साधु मिल गया वो हमारे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य है। उनका माहात्म्य समझ कर, उनमें निर्दोषभाव - दिव्यभाव रख कर, उनकी हर एक क्रिया प्रभु कर रहे हैं – ऐसे भाव से हम देखें। ये दर्शन जो स्वामी रामदेवजी ने करवाया, वो ही 'दर्शन' करना। ऐसा दर्शन करने की हमको दृष्टि मिले, उसे ही स्पीरीच्युअल सायन्स – अध्यात्म ज्ञान बोलते हैं। ऐसा अध्यात्म ज्ञान हम को सिद्ध हो जाए...

बहुत अच्छा बनाया है रॉकेट ! प्लेन को 'रन वे' चाहिए, फिर वो टेईक ऑफ लेता है; लेकिन रॉकेट जहाँ होता है वहाँ से टेईक ऑफ लेता है। तो ऐसे साधु मिलने से हमारी कई सालों की साधना (शॉर्ट) हो जाती है। साधना फिर एक ही होती है, उनके दर्शन करके - उनके पास दो हाथ जोड़ कर काम करें तो फिजूल की हमारी दौड़ाभागी मिट जाएगी। रन वे पर आना - जाना मिट जाएगा। जहाँ पर होंगे वहाँ से लिफ्ट हो जाएंगे और प्रभु के साथ हमारा संबंध जुड़ जाएगा। हमारा जीवन शांति, आनंद और सुख से भर जाएगा। ऐसे साधु की हमें भेंट मिली है।

लेकिन, मानव रूप में प्रभु जब मिलते हैं - पहचाने नहीं जाते। मानव रूप में राम मिले, तो पहचानने में बहुत कठिनाई हुई। मानव रूप में कृष्ण आए, तो पहचानने में बहुत कठिनाई आई। ऐसे साधु जब हमारे साथ, हमारे जैसे होकर आते हैं, तब पहचानना बहुत मुश्किल होता है। हम मायिक आँख से देखते हैं। हमारी बुद्धि भी मायिक है। तो, इन्टरप्रीटेशन भी मायिक करते हैं। उसके लिए स्पीरीच्युआलीटी चाहिए, जिससे भीतर की आँख खुल जाए। भीतर की आँख तब खुलती है, जब हम उनके कार्य में निर्दोषभाव - दिव्यभाव से शामिल हो जाएं। दो हाथ जोड़ कर वो जो बोलें ऐसे करने से अपने आप भीतर में दर्शन होता है।

तो, ऐसे गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर प्रार्थना करते हैं कि आप छोटे दिखते हो, लेकिन प्रभुता आप में है। आप में साधुता है, जिसके द्वारा प्रभु धारण करके आप हमारे जैसे हैं। लेकिन आप में (हम) वो प्रभु का दर्शन करें - आज्ञा में रहें। जो भी दिल्ली वाले आज्ञा में रह कर आपके प्रति सद्‌भाव - निष्ठा रखते हैं, उन सब का जीवन धन्य बन जाए। सब को तन, मन, धन और आत्मा से खूब - खूब सुखी बनाएं – ऐसी प्रार्थना करते हैं। रामदेवजी पतंजलि योग का लोकार्पण कर रहे हैं, वो पूरा कार्यक्रम निर्विघ्न पार उतरे – जो आएं उनको बहुत आनंद मिले ऐसी स्वामिनारायण भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हैं। सब को जय स्वामिनारायण !

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन एवं उद्‌बोधन)

॥ जय स्वामिनारायण ॥

॥ स्वामिश्रीजी ॥

परम पूज्य स्वामिश्री कृपालुदेवजी महाराज एवं परम पूज्य शंकरदेवजी महाराज के आशीर्वाद रूप दिव्ययोग मंदिर के अधिष्ठाता दृढ़ संकल्पनिष्ठ परम श्रद्धेय योगमूर्ति ब्रह्मविद् श्री रामदेवजी महाराज !

हार्दिक जय स्वामिनारायण ! जय भारत !

सर्वप्रथम तो तन-मन, आधि-व्याधि से त्रस्त मनुष्यों को निःस्वार्थ भाव से सुखीमात्र करने का आपके द्वारा किए जा रहे अथक् प्रयासों – क्रांतिकारी अभियान को कोटि-कोटि अभिनंदन... वंदन !

'ऋषियों और अवतारों की भूमि' भारत को अर्थात् भारतीय वैदिक संस्कृति-परंपराओं को जीवंत - उज्ज्वल बनाने एक जाग्रत, चरित्रवान एवं स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए आपने जो बिगुल बजाया है... जीवमात्र की सामाजिक व आध्यात्मिक उत्क्रांति के लिए दृढ़ संकल्प होकर दिन-रात देखे बिना आप जो भगीरथ कार्य-अविरत परिश्रम कर रहे हैं – इस हेतु समग्र मानव जाति युगों तक आपकी ऋणी बनी रहेगी। मनुष्यों को निरामय रखने के लिए आप ईश्वर द्वारा धरती पर भेजा गया एक दिव्य दूत-फरिश्ता हो, प्रभु द्वारा दी गई अनमोल-अनुपम भेंट हो।

आपके इस योगदान से भावि भारत अवश्य पूरे विश्व में गौरवान्वित होगा... पूर्ण रूप से स्वस्थ जीवन जीने के लिए सभी की नजरें भारत की ओर ही सहज उठेंगी। हम सभी को आप पर गर्व है।

ज्ञान, विज्ञान, योग, प्राणायाम, आयुर्वेद का समन्वय और इन सबसे अधिक प्रभु की भक्ति रूप परहित में ही आपने समग्र जीवन नितांत समर्पित करके भारतवासियों को अपने जीवन से **'परोपकाराय सतां विभूतयः'** का भव्य संदेश दिया है। एक अद्‌भुत आदर्श रख दिया है। **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'** अर्थात् – सच में धर्म करने प्रथम साधन शरीर है; इसी उक्ति को ध्यान में लेकर धर्म की राह पर चलने के लिए शरीर स्वस्थ होना जरुरी है - इस पथ पर आप सभी को अग्रसर कर रहे हो !

आप द्वारा आरंभ की गई महायज्ञ – कल्याण की ज्योति विश्व में अब महाज्वाला का रूप ले चुकी है। निरामय हो रहे अनगिनत लोगों के अंतर की दुआएँ आपके साथ हैं। प्रभु आपको दीर्घायु-शतायु बनाएं जिससे आपके सान्निध्य एवं मार्गदर्शन से चिरकाल तक सारी मानवजाति लाभान्वित हो सके – ऐसी भगवान स्वामिनारायण, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज, गुरुवर्य प.पू. पप्पाजी, गुरुवर्य प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, गुरुवर्य प.पू. साहेबजी एवं सर्व गुणातीत स्वरूपों के चरणों में हमारी दिली प्रार्थना – अभीप्सा सह

आपके ही स्नेहाधीन

साधु [illegible] व

समग्र गुणातीत परिवार के
हार्दिक जय स्वामिनारायण !
२७ मार्च २००५, रविवार

विरल विभूति परम पूज्य काकाजी महाराज की जयंती एवं गुरुपूर्णिमा की पवित्र वेला आई रे...

१२ जून, सोमवार प.पू. काकाजी महाराज की जयंती
और
११ जुलाई, मंगलवार को **गुरुपूर्णिमा** –
दो महामंगलकारी अवसर अब नज़दीक आ रहे हैं...

मूल अक्षरब्रह्म और पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण का प्रगट स्वरूप हमें प.पू. काकाजी के रूप में मिला... वे स्वयं अनादि के थे। तभी तो गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज – गुरुहरि योगीजी महाराज मानो हमारे लिए ही आदर्श रखने उन्हें अक्षरधाम से साथ लाए। और... १९७४ में प.पू. पप्पाजी की हीरक जयंती पर आशीर्वचन देते हुए प.पू. काकाजी मर्म में बोले भी थे – **'साक्षात् गुणातीत कहता है आज...!'**

भले ही वे सब के थे, पर भीतर से वे केवल एक अपने प्रभु के थे। सो, **पू. गोरधनकाका** कहते थे –
सभी के संगी होते हुए भी, प.पू. काकाजी 'असंगी' थे !

उनकी हाज़िरी मात्र वातावरण को दिव्यता से भर देती। ब्रह्म की मस्तीभरा उनका मुखारविंद सब को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता। हजारों की भीड़ में भी वे अलग से ही पहचाने जाते। कितना ही निराश - उदास व्यक्ति उनके पास आए, तो प.पू. काकाजी का ब्रह्मनाद उसमें नई उमंग, हिम्मत, मस्ती भर देता।

और... प.पू. काकाजी द्वारा ब्रह्मज्ञान की अस्खलित धारा बहती ही रही ! हम गुणातीतभाव में जल्द से जल्द सब रहते हो जाएं, एकमात्र इसी तमन्ना से अक्षरपुरुषोत्तम की प्रगट की निष्ठा दृढ़ कराते हुए जीवन की हर पल उन्होंने बिताई। तभी तो उनकी उदारता का कोई छोर नहीं दिखाई पड़ता... उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की अनुवृत्ति की भक्ति की रीत हम सब के लिए खुल्ली रखी।

भगवान जब मानव रूप में पृथ्वी पर पधारते हैं, तब उनकी जरुर कोई रुचि, रहस्य, अभिप्राय होते हैं। जो - जो मुक्त वो समझ कर उन्हें साथ देते हैं, उन्हें वे निहाल - निहाल कर देते हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा सौंपे आध्यात्मिक नूतन क्रांतिकारी कार्य में प.पू. काकाजी ने हर प्रकार से पूर्ण समर्पण किया और प.पू. पप्पाजी को साथ लेकर एक - दूसरे के पूरक व प्रेरक बन कर एक नूतन समाज की स्थापना करी।

हमारे जीवन में हमारे साथ हमारी कक्षा पर आकर, एक कौटुम्बिक भावना से हमें उनके साथ जोड़ कर, जगत की जड़ता के बंधनों से मुक्त कराने जीवनभर लगे रहे। प्रगट स्वरूप के प्रति निर्दोषबुद्धि रख कर सम्यक् रूप से उसका कैसा सेवन किया जाए और संबंध वाले मुक्तों की समधी - दामाद की तरह कैसे सेवा करनी – वह उन्होंने अपने वर्तन से बताया। यूं, जो भी जीव उनके संबंध में आता, वह उनके प्रेम, लाड़ - प्यार, करुणा के धोध में स्नान करते - करते सहज ही आध्यात्मिकता की सीढ़ियाँ चढ़ता।

मानो अनंत जीवों का उद्धार करने ही धरती पर प.पू. काकाजी का प्रागट्य हुआ। जगत में अपनों से धोखा खाए हुए - टूटे हुए दिलों को अपनी गोद देकर काल, कर्म, माया के भय से मुक्त किए और उन्हें शीतलता, निर्भयता, निश्चिंतता प्रदान की। वह छोटा हो - बड़ा हो, धनवान हो - निर्धन हो, लेकिन उन्होंने तो सिर्फ संबंध ही देखा और... इसीलिए वे अपनी परावाणी में कई बार कहते भी थे कि – ***'हे प्रभु में जैसा भी हूँ, तुम्हारा हूँ...' अर्जुन चाहे कैसा भी था, पर वो श्रीकृष्ण के आदेश –'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं' मान कर वर्ता। उसी प्रकार जीवन में एक जगह पर 'नो आर्ग्युमेन्ट्स' -'आप कहो वैसा... आप कहो वैसा करना है' - ऐसा पक्का कर रखना। जीवभाव में फंस कर बकरी के बच्चे की भाँति 'बें - बें' ना करो, बल्कि शेर के बच्चे की भाँति स्वरूपनिष्ठा वाली शूरवीरता से माया के साथ भजन रूपी शस्त्र से लड़ो।***

यूं, प.पू. काकाजी - प्रभु के दास और साधकों के पथप्रदर्शक थे। **प.पू. पप्पाजी के शब्दों में** प.पू. काकाजी का सम्यक् स्वरूप निहारें तो –

स्वरुपनिष्ठा, सुहृद्भाव, निर्दोषभाव का समन्वय यानि – प.पू. काकाजी !

और... **समग्र गुणातीत समाज के आध्यात्मिक गुरु !** सो, **गुरुपूर्णिमा** के परम पवित्र पर्व पर ऐसे प्रभु स्वरूप गुरु का पूजन करने के लिए शिष्यों के मन में उमंग उठना स्वाभाविक है। बशर्ते, '**गुरुदक्षिणा**' में हम उन्हें ना जँचते अपने स्वभाव उनके चरणों में समर्पित कर दें।

श्रीजी के अखंड धारक प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई जैसे ज्योतिर्धर चैतन्यों का जतन करके उन्हें अध्यात्म के उन्नत शिखर पर ले जाने का सनातन कार्य कर रहे हैं। सत्त्व, रज और तम से ऊपर उठा कर माया के बंधनों से मुक्त करके प्रभु में अखंड जोड़ते हैं।

वाकई, **ब्रह्मरूप वर्ता कर परब्रह्म में जोड़ने का कार्य तो प्रभु प्रगटाई 'विभूति' यानि – 'प्रगट गुरु' ही कर सकते हैं। 'मूर्ति' हममें संस्कार जरुर डाल पाएगी, पर हमारे प्रारब्ध का परिवर्तन और हमारी प्रकृति का रूपांतर नहीं कर पाएगी।**

हम मायिक हैं और गुरु अमायिक हैं। सो, अंतर से गुरु की महिमा समझनी - गुरु को दिव्य और अंतर्यामी मान कर उनका सेवन करना कठिन तो है, लेकिन, यदि हमारा समर्पण सर्वथा संपूर्ण होगा, तो मोक्ष का द्वार खुलने में कोई संदेह भी नहीं है। उनका तो एकमात्र यही उद्यम होता है कि किसी तरह जल्द से जल्द उनके शिष्य का अज्ञान, अंधकार टाल कर उसे मन - स्वभावों की जकड़ से मुक्त करके जीतेजी ही अक्षरधाम के सुख से सुखी कर दें। बस, शिष्य के लिए मन सौंपना जरुरी पहलू बन जाता है। और... हमारे मान, स्वाद, स्नेह, लोभ, काम की वृत्तियों पर गुरु जब चोट लगाए, तब हम उसके प्रति मनुष्यभाव में जाने के बजाय उन्हें यदि श्रेयदाता ही मान लेंगे, तो हमारी पूर्णाहुति शीघ्र होगी।

ऐसी पूर्णाहुति के लिए सर्वोच्च गुरुभक्ति कौन - सी कही जाए ?

गुरुभक्ति के कई प्रकार हैं –

- ❋ एकलव्य की भाँति दिव्यभाव व श्रद्धा से समर्पित होना।
- ❋ उपमन्यु की तरह गुरु आज्ञा में याहोम होना।
- ❋ गुरुमय होकर पल - पल उनकी अनुवृत्ति को समझ कर उनकी भक्ति करनी।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज कहते कि मुझे सबको वच. प्र. २७ जैसा बनाना है। सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों का दिन - रात का अविरत परिश्रम भी इसीलिए है। पर, यह बात तभी सिद्ध हो पाएगी जब हम –

- ❋ मुझे मिले गुरु अक्षरधाम के सदा दिव्य साकार स्वरूप ही हैं।
- ❋ मेरे गुरु की मर्जी बिना कोई कुछ करने समर्थ हो ही नहीं सकता।
- ❋ मुझे मिले गुरु ही सर्व के प्रेरक, प्रवर्तक और नियंता बन कर मेरे जीवन की घड़ाई कर रहे हैं।
- ❋ मेरे गुरु मुझे निरंतर देख रहे हैं और मेरी रक्षा में ही बैठे हैं।
- ❋ मेरे गुरु मेरे 'साक्षी' हैं, सो मुझे कोई भी बचाव करना नहीं है। उनका बल लेकर उनमें ही खो जाना है – लीन हो जाना है।
- ❋ मेरे गुरु सभी सुखों का भंडार हैं और निरंतर मेरी प्रार्थना सुनते ही हैं व मेरा परम हित ही कर रहे हैं।

अपनी जीवनशैली ऐसी बना दें, वही सर्वोच्च गुरुभक्ति - गुरुदक्षिणा कही जाएगी ना ! लेकिन हम हमारा सारा समय तो मुक्तों के प्रति पूर्वग्रह, मनभेद, ग्रंथियों को पकड़े रखने में ही गवां रहे हैं !

प.पू. गुरुजी द्वारा कुछ समय पहले ही कथावार्ता दौरान समझाया '**श्री चैतन्य महाप्रभु**' का एक छोटा - सा **प्रसंग** निहारें, जो **हमें ऐसी ग्रंथियों को छोड़ने मजबूर कर देगा।**

बचपन में जिनका नाम **निमाई** रखा गया था, लेकिन आगे जाकर '**चैतन्य महाप्रभु**' के नाम से जो जाने गए व पूरे बंगाल में 'कृष्ण भक्ति' की भावना जिन्होंने फैलाई, उनके जीवन की यह घटना है।

उस समय गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। बंगाल की 'नदिया' संस्कृत विद्यापीठ में वे 'न्याय' की शिक्षा ले रहे थे। 'दीधिति' ग्रंथ के निर्माता पंडित रघुनाथजी भी तब उसी पाठशाला में पढ़ते थे।

निमाई पंडित एवं रघुनाथजी एक - दूसरे के निकट परिचय में आए। दोनों मित्र रोज मिलते और न्यायशास्त्र

की चर्चा करते। निमाई की 'न्याय' में बहुत अच्छी पकड़ थी। मित्रता के दौरान पंडित रघुनाथ को ख्याल आ गया कि – 'न्यायशास्त्र में पंडित निमाई के सिवा मेरे साथ दूसरा कोई तो स्पर्धा कर सके ऐसा नहीं है।' उन्हें भीतर में ऐसा था कि पंडित निमाई मुझ से आगे बढ़ जाएंगे। इससे उनके दिल में निमाई के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होने लगी। हाँ, सरल निमाई के मन में तो ऐसी कोई बात ही नहीं थी।

एक दिन पंडित रघुनाथ पाठशाला में दिखाई नहीं दिए, सो निमाई उनके घर गए। रघुनाथ उस समय भोजन बना रहे थे। हँसते-हँसते निमाई ने उन्हें पूछा –

'पंडितजी ! आज भरी दोपहरी में क्यों रसोई बना रहे हो ?'

अग्नि फूँकते - फूँकते रघुनाथ ने बताया कि –

'क्या कहूँ भाई ! गुरुजी ने न्याय की एक पंक्ति दी थी, उसे समझने व पूरी करने में इतना अधिक समय चला गया।'

निमाई ने कहा – 'ज़रा मुझे भी वह पंक्ति सुनाओ ना। कैसी पेचीदा है, वह ख्याल तो पड़े।' रघुनाथ ने न्याय की वह पंक्ति सुनाई ही थी कि निमाई ने तुरंत सहज ही कहा कि –

'यह तो बहुत सरल है, तुम इसमें इतना क्यों घबरा गए ?'

निमाई पंडित ने तो यह सब सरलता से कहा, लेकिन रघुनाथ तो स्तब्ध ही हो गए। उनका तेज हार गया। रसोई बनाना भी अब उन्हें सूझ नहीं रहा था। सरल निमाई तो हँसते - हँसते चले गए, उनके मन में कोई ईर्ष्या थी ही नहीं।

पंडित रघुनाथजी ने नव्यन्याय पर एक ग्रंथ लिखा है, जो ग्रंथ आज 'दीधिति' नाम से प्रख्यात है। पंडित रघुनाथ को मन के भीतर में ऐसा अभिमान था कि 'मेरा यह ग्रंथ अद्वितीय गिना जाएगा।' पर, उन्हें सुनने में आया था कि 'निमाई भी न्याय पर एक ग्रंथ लिख रहे हैं।'

एक बार भागीरथी नदी में नाव पर दोनों मित्र जा रहे थे। मौका देख कर रघुनाथ ने पूछा – 'निमाई, तुम न्याय पर ग्रंथ लिख रहे हो, ऐसा मैंने सुना है। वह ग्रंथ मुझे दिखाओगे क्या ?'

निमाई ने हँसते - हँसते ही बताया – 'अरे पंडितराज, आप कैसी बात करते हो ? न्याय जैसे जटिल विषय पर मुझे से क्या लिखा जाए ? केवल मन के विनोद की खातिर थोड़ा लिखा जरुर है।'

रघुनाथ के खूब आग्रह करने पर बगल में लटके थैले में से अपना ग्रंथ निकाल कर निमाई सुनाने लगे। रघुनाथ जैसे - जैसे ग्रंथ सुनते गए, वैसे - वैसे उनकी मनोवेदना बढ़ती गई। ईर्ष्या से उनका हृदय जलने लगा। निमाई द्वारा लिखा ग्रंथ अत्यधिक सरल एवं सचोट तर्कयुक्त था। इस ग्रंथ की तुलना में रघुनाथ को अपना ग्रंथ हर तरह से न्यून लगने लगा। सो, वे एकदम फूट -फूट कर रोने लगे। निर्मल हृदय के निमाई ने रोने का कारण पूछा।

ईर्ष्या की ज्वाला में तपते पंडित रघुनाथ ने दिल खोल कर कहा –

'भाई निमाई ! आप तो सरल हो, मेरे दिल में ही ईर्ष्या भरी है। तुम्हारे ग्रंथ के आगे मेरे ग्रंथ का कोई मोल नहीं। विश्व प्रसिद्ध होने की मेरी मनसा मन में ही रह गई।'

सरल निमाई रघुनाथ के मनोभाव को समझ गए। और... नाँव में बैठे - बैठे तनिक भी विलंब किए बिना तुरंत उन्होंने अपना ग्रंथ भागीरथी में बहा दिया। इस प्रकार न्यायशास्त्र का एक अपूर्व ग्रंथ गंगा के प्रवाह में बह गया और रघुनाथ की ईर्ष्या का दर्शन कराता 'दीधिति' ग्रंथ लेखक के हृदय जितना ही जटिल बन कर आज भी विद्यार्थियों को दुविधा में डाल रहा है।

निमाई की इस सरलता को हम किस बॅरोमीटर से नाप पाएंगे ? अत्यधिक परिश्रम से लिखा ग्रंथ, **मित्र की खुशी के लिए** – कुछ भी विचार करे बिना मात्र एक सैकण्ड में **नदी में बहा देना** !

किसी भी कीमत पर संप, सुहृद्‌भाव और एकता बनाए रखने का मंत्र देने वाला 'प्रगट गुणातीत गुरु' भी उनके जीवन में नहीं था और... ना ही ऐसे त्याग पर प्रसन्नता दर्शाने वाला भी कोई था। तब भी वे यह कर पाए...!

'प्रभु वश हो जाएं, सरल मुक्तों के पास हो हम...'

यह **हम** सभी **खूब जोर - शोर से व झूम - झूम कर गाते तो हैं, लेकिन विचारें कि क्या प्रसंग पर हम यूं वर्तते हैं ?**

तो आइए, **12 जून – प.पू. काकाजी महाराज की जयंती** और **गुरुपूर्णिमा** के इन दोनों मंगलकारी अवसरों पर हम – प्रगट के उपासक इस एक प्रसंग को नज़र समक्ष रख कर अग्रसर हों। यह प्रसंग पढ़वाते हुए परम पूज्य गुरुजी ने कहा था कि एक अवतार कोटि के 'चैतन्य' ने ऐसा सहज में ही कर लिया, तो प्रकृतिपुरुष से परे के

प.पू. काकाजी व प्रगट गुणातीत स्वरूप **हम से तो कितनी ऊँची अपेक्षा रखते होंगे ?** हम अपने भीतर झाँकें तो कीर्ति एवं छुपी महत्त्वाकांक्षाओं को पोसने के लिए हम चालाकियों से लगे ही रहते हैं। प्रत्यक्ष स्वरूपों के सालों तक की इतनी कथावार्ता, इतने परिश्रम के बाद भी हम मुक्तों के पास झुकने तैयार नहीं रहते। पर, अब इसकी गहनता को समझ कर दिल की सच्चाई से हम ऐसा जीने अग्रसर हों – यही हमने उनकी **सच्ची जयंती** और **गुरुपूर्णिमा** मनाई !

ताड़देव की गतिविधियाँ...

प.पू. गुरुजी की जयंती – उत्सव के वाईन्डींग से फारिग ही हुए थे कि प.पू. गुरुजी के साथ खूब अपनेपन से जुड़े **प.भ. प्रमीतभाई संघवी** एक दिन रात को आए और बातों - बातों में उन्होंने मंदिर के पूरे स्टाफ को रीलॅक्स करने हिल स्टेशन पर ले जाने का प.पू. गुरुजी को आग्रह किया। अत्यधिक प्रवृत्तियाँ एवं पू. परछाईं के 'गुर्दा प्रत्यारोपण' के ऑप्रेशन इत्यादि के कारण पिछले डेढ़ साल से प.पू. गुरुजी मंदिर के स्टाफ के साथ कहीं भी बाहर नहीं जा पाए थे। यह बात होने के दूसरे - तीसरे दिन तो प.भ. प्रमीतजी शिमला के नज़दीक 'चैल' का सरवे करने भी चले गए। लेकिन, उन्हें वह जगह सत्संग के लिए सही नहीं लगी। तो, उसके नज़दीक अन्य दो - तीन जगह गए, और... आख़िरकार उत्तरांचल में नैनीताल के नज़दीक **'मुक्तेश्वर'** का माहौल उन्हें बहुत अच्छा लगा और वहाँ के **'क्रिश्ना ऑर्चिड रिसोर्ट'** में शिविर के लिए सुविधा कर दी।

प.भ. प्रमीतभाई ने अपनी खूब व्यस्त दिनचर्या में से करीब तीन - चार दिन जो अच्छी जगह ढूंढने में निकाले वह उनका प.पू. गुरुजी से अपनापन - आत्मीयता हर एक को भीतर तक स्पर्श कर गई।

यूं, प.पू. गुरुजी की निश्रा में **९ अप्रैल से १३ अप्रैल 'रिलेक्सेशन शिविर'** हुई। वहाँ के शांत वातावरण और प.पू. गुरुजी की दिव्य सन्निधी में सभी ने अपने आपको खूब रिलेक्स महसूस किया। १४ अप्रैल की सुबह मुक्तेश्वर से सभी दिल्ली के लिए रवाना हुए... रास्ते में 'पंतनगर' प.भ. प्रमीतभाई की फैक्टरी में प्रसाद लेकर रात तक बस द्वारा कई मुक्त दिल्ली पहुँच गए और... प.पू. गुरुजी व थोड़े मुक्तों की ट्रेन से बुकिंग होने के कारण वे १५ अप्रैल की सुबह पहुँचे।

१६ अप्रैल को तो **प.पू. पप्पाजी** की तबियत खूब नासाज़ होने के समाचार मिले... सो, **१७ अप्रैल** की शाम की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी व दस मुक्त विद्यानगर गए। प.पू. गुरुजी को वहाँ प.पू. पप्पाजी की तबियत ज्यादा अच्छी नहीं लगी और यह सुन कर दिल्ली मंदिर के सभी संत एवं अक्षरज्योति की सभी बहनें करीब चालीस - पैंतालीस मुक्तों के साथ 'संपर्क क्रांति' से निकल कर आणंद पहुँचे और ब्रह्मज्योति में नित्यविधि करके गुणातीत ज्योत – प.पू. पप्पाजी के दर्शन के लिए गए। गुणातीत ज्योत के दिव्य वातावरण में प.पू. पप्पाजी की तबियत के लिए अखंड धुन जारी थी। पाँच दिन वहाँ सभी मुक्त ब्रह्मज्योति की तपोभूमि में रहे और २३ की रात को 'राजधानी' से निकल कर दूसरे दिन दिल्ली पहुँचे। **प.पू. गुरुजी** तो फ्लाईट से **२३ अप्रैल** की मध्यरात्रि को ही दो बजे दिल्ली - मंदिर पहुँच गए।

प.पू. पप्पाजी की तबियत अभी भी अधिक अच्छी नहीं है। सो, हम सभी उनके निरामय स्वास्थ्य के लिए भजन जारी रखें।

स्वामिनारायण.... जपो निरंतर संत की स्मृति संग......

हर वर्ष की तरह इस बार भी **21 मई '06, रविवार से–12 जून '03, सोमवार तक**
रोज सुबह 6:30 से 8:15
प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में 'ताड़देव' में जपयज्ञ का कार्यक्रम शुरू होगा।
तो,
जो भी मुक्त इस जपयज्ञ में भले थोड़े दिनों के लिए आने की इच्छा रखते हों;
वे यदि हमें पहले से सूचित कर पाएं, तो उनके ठहरने – करने की व्यवस्था कर रखने में हमें सुविधा होगी।

R.N.I. 28971/ 77

चातुर्मास के नियम... *(7 जुलाई 2006, शुक्रवार से 2 नवंबर 2006, गुरुवार तक)*

1. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
2. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
3. सावन के महीने यानि–12 जुलाई से 23 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
4. 7 जुलाई-नियम की एकादशी, 16 अगस्त-जन्माष्टमी, 4 सितंबर-जलझीलनी एकादशी, 2 नवंबर-कार्तिक शुक्ला एकादशी–इन चारों दिनों व्रत रखें।
5. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवाना।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, ब्रह्मविद्या, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. **रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।**
8. परिवार में एवं सत्संगिओं में संप-सुहृद्‌भाव-एकता से मिलजुल कर काम-सेवा करने की आदत डालना और उस हेतु प्रभु का बल लें।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 23. 5. 2006,	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 24. 5. 2006,	बुधवार	–	**गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन**
(3)	दि. 01. 6. 2006,	गुरुवार	–	**प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन** 'गुणातीत ज्योत' स्थापना दिन
(4)	दि. 06. 6. 2006,	मंगलवार	–	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(5)	दि. 07. 6. 2006,	बुधवार	–	भीम एकादशी, व्रत
(6)	दि. 11. 6. 2006,	रविवार	–	वटसावित्री
(7)	दि. 12. 6. 2006,	सोमवार	–	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन** **(सुबह 6:30 से 8:15 मनाएंगे और जपयज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे)**
(8)	दि. 21. 6. 2006,	बुधवार	–	एकादशी, व्रत
(9)	दि. 27. 6. 2006,	मंगलवार	–	रथयात्रा
(10)	दि. 07. 7. 2006,	शुक्रवार	–	देवशयनी एकादशी, व्रत– चातुर्मास प्रारंभ
(11)	दि. 11. 7. 2006,	मंगलवार	–	***गुरुपूर्णिमा***

(सुबह 7:30 से 9:00 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे। जो इस समय पर नहीं आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine Despatched on 15th of alternate months. **If undelivered please return to :—**
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers** 308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi